RAJBIL26868/2016/1284525
वर्ष 2 अंक 12 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका
अगस्त 2019

पेज संख्या : 36 राजसमंद
प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

15th August स्वतंत्रता दिवस

बस्ते के बोझ तले सिकुड़ता बचपन

टैगोर साइंस एकेडमी पर अवैध संचालन का आरोप, एक माह बाद भी जांच नहीं

@ पेज 9

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

CHASING THE CLOUDS

India's first company seeding monsoon clouds in select areas of Water-stressed Rajasthan

Trebling STP capacity to 60 million litres of sewage per day in Udaipur, conserving fresh Water usage in the 'City of Lakes'

Cloud seeding in select areas of Rajasthan, enhancing Water security after low monsoons

India's first dry-tailing waste disposal in a mine under commissioning, saving 2500 m³ per day of Water

Deepening of lakes & water bodies by 4 lakh m³ desilting this year, increasing retention of monsoon Water

HIGHLIGHTS - 1st QUARTER RESULTS

PRODUCTION	QUARTER ENDING		
	June 30, 2019	June 30, 2018	Growth
Ore mined (Mn tons)	3.42	3.12	10%
Refined Silver (MT)	159.00	138.00	15%
Refined Lead (KT)	48.00	42.00	13%

Hindustan Zinc: World's second largest integrated Zinc producer and ninth largest integrated Silver producer

Ranked first Globally in Environment in Metals & Mining sector
(Dow Jones Sustainability Index 2018)

HINDUSTAN ZINC

Zinc & Silver of India

HINDUSTAN ZINC LIMITED | Regd Office: Yasad Bhawan, Udaipur-313004
PBX No. 0294-6604000 | CIN-L27204RJ1966PLC001208 | www.hzlindia.com

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा
सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी
सूर्यप्रकाश दीक्षित
विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा
गणपतसिंह
वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे, नरेश पालीवाल

कार्यालय पता
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 99500-84705

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का शुल्क मात्र 200 रुपए

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101

सम्पादकीय

साहित्य के प्रति सहभागिता की अपेक्षा

अनादिकाल से मनुष्य का संगीत, साहित्य से लगाव रहा है। इनके अवलम्बन के आधार पर असीम मानसिक शांति को प्राप्त किया है। सामाजिक, पारिवारिक जीवनयापन में अपने कर्तव्यों की आचार संहिता साहित्य से ही प्राप्त हुई है। धर्म-कर्म के पथ की ओर अग्रसर होने में भी साहित्य ने ही सूर्य की भांति रोशनी प्रदान की है। सामाजिक शासकीय, राजनीतिक, परिस्थितियां कितनी भी प्रतिकूल रही, लेकिन साहित्य की डगर से जनमानस कभी भी विमुख नहीं रहा है। आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तक अनेक शासकों का शासन रहा। सामाजिक अस्थिरता भंयकर रही, लेकिन साहित्य के साधक एवं पाठक कभी विचलित नहीं हुए। वर्तमान के आधुनिक युग की अंधीदौड़ आपाधापी में जनसमुदाय साहित्य को बिसरा चुका है। जब किसी से साहित्य की चर्चा की जाती है, तो यह जवाब तपाक से मिलता है कि हुजूर हमें कविता बनाना कहा आता है ? हम साहित्य सृजन नहीं कर सकते हैं। इस पर मेरा निवेदन है कि साहित्य की सेवा या साहित्य संबलन के लिए कविता लिखना, साहित्य सृजन करना मुख्य सोपान नहीं है। साहित्य संवाहक के रूप में तीन चरण है- पठन, आयोजन एंव सृजन। हमें प्रथम चरण पठन को पूर्ण करने का सतत् प्रयास करना है। हम सभी साहित्य का नियमित पठन करें, स्वाध्याय करें। यदि पठन करने में अनुकूलता या रूचि नहीं बनती है, तब द्वितीय चरण साहित्यक आयोजन करें। लघु गोष्ठियों का आयोजक बनें। साहित्यकारों के सम्मेलन के संयोजक बने। यही साहित्य के प्रति जनसमुदाय की सहभागिता का पुण्य अनुष्ठान होगा। तीसरा और अंतिम चरण है सृजन। इसके लिए तो आग्रह करने की आवश्यकता नहीं है, स्वत: सृजन का अंकुरण हो जाता है। साहित्य के प्रति जनसमुदाय की सहभागिता पठन, आयोजन एवं सृजन में होना वर्तमान समय की प्रांसगिक आवश्यकता है। आज का मनुष्य अशान्त, खिन्न, उदिग्न, एवं मानसिक अस्थिर हो रहा है। क्योंकि साहित्य से किनारा कर लिया है। जनसमुदाय को साहित्य की नाव में सवार होने की अपेक्षा है।

अतिथि सम्पादक

नारायणसिंह राव 'निराकार'
कवि एंव साहित्यकार, आईडाणा
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली, 9413423585

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** बस्ते के बोझ तले सिकुड़ताल बचपन — पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** टैगोर साइंस एकेडमी पर अवैध संचालन का आरोप — पेज - 9
3. **तीखी मिर्ची :** सांप को दूध आखिर कब तक — पेज- 11
4. **व्यंग्य :** डिबेट का फन — पेज- 12
5. **मेरा गांव मेरे लोग :** रामबाबूजी शर्मा और सुंदरलालजी देवपुरा — पेज - 14
6. **माटी का लाल :** श्री सालिगरामजी शर्मा — पेज - 16
7. **कहानी :** कैसा ये प्यार तेरा — पेज - 18
8. **गुमनाम शख्सियत** हाथ से हाथ मिले तो महक उठा गुलशन — पेज - 20
9. **परिचर्चा :** जम्मू-कश्मीर का विलय और तीन तलाक मुद्दा — पेज - 22
10. **कहानी :** वह एक इंसान तो है — पेज - 24
11. **कविताएं :** छूने को आकाश चला मैं, गजल व मां — पेज - 25
12. **राजसमंद की खबरें** — पेज- 28
13. **आध्यात्म :** बाधक ज्ञान का अहंकार — पेज - 29
14. **व्यंग्य :** हर तरफ बिखरा है नौटंकीबाजों का तिलस्म — पेज - 30
15. **बिजनेस न्यूज :** टेंशन के कपड़े खरीद हो जाइए नो टेंशन — पेज - 33
16. **मेवाड़ी चौपाल :** उतरी घाणी बलीता जोग — पेज - 34

बस्ते के बोझ तले सिकुड़ता बचपन

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमंद. प्रदेश में प्रारंभिक व माध्यमिक विद्यालयों में और खास तौर से निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं की उम्र और उनकी क्षमता पर स्कूली बैग भारी पड़ रहा है। औसतन एक बच्चे के बैग में चार से छह किलो वजन होता है, जो उन बच्चों की शारीरिक व मानसिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है। छात्र- छात्रा की उम्र के आधार पर बैग का वजन केन्द्र सरकार द्वारा नवम्बर 2018 में तय कर दिया, लेकिन जमीनी स्तर पर आज तक भी उसकी पालना नहीं हो पाई है। इसकी मुख्य वजह शिक्षा महकमे की उदासीनता है। इस कारण निजी स्कूल संचालक प्ले, नर्सरी से ही अनावश्यक पाठ्यक्रम जारी कर देते हैं, जिसकी वजह से बच्चों के शारीरिक और उनके मानसिक स्तर पर भी अनैतिक दबाव पड़ रहा है। फिर भी इसको लेकर न तो अभिभावक गंभीरता से ध्यान दे रहा है और न ही सरकार व शिक्षाविदों को परवाह है।

राजसमंद जिले में नर्सरी से पांचवीं, आठवीं, दसवीं एवं 12वीं तक की करीब 500 निजी विद्यालय संचालित है। इन स्कूलों में नर्सरी, एलकेजी, यूकेजी में भी दो से तीन तीन पुस्तकें और कॉपियां भी काम में ली जा रही है। निजी स्कूल में पहली कक्षा के बैग का वजन औसतन 8 से 10 किलो वजन हो रहा है। इस कारण बच्चों के शारीरिक विकास पर विपरीत प्रभाव डाल रहा है।

लम्बे समय से चर्चा में है यह मुद्दा

स्कूली बच्चों के बस्ते का बोझ काफी समय से चर्चा का विषय रहा है। 5वीं से लेकर 12वीं क्लास तक के बच्चे के बैग का काफी वजन होता है। इससे उनको स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। स्कूली बच्चों के बस्ते के वजन की समस्या को सबसे पहले बार 1993 में यशपाल कमेटी ने उठाया था। कमेटी ने प्रस्ताव रखा था कि पाठ्यपुस्तकों को स्कूल की संपत्ति समझा जाए और बच्चों को स्कूल में ही किताब रखने के लिए लॉकर्स अलॉट किए जाए। इसमें छात्रों के होमवर्क और क्लास वर्क के लिए भी अलग टाइम, टेबल बनाने की मांग रखी गई थी, ताकि बच्चों को रोजाना किताब घर न ले जानी पड़े। फिर भी वे कानून कायदे अब तक भी जमीनी स्तर पर लागू नहीं हो पाए।

एनसीएफ का यह है परिपत्र

बच्चों के बस्ते के बोझ की समस्या को देखते हुए नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क (एनसीएफ) ने 2005 में एक परिपत्र जारी किया। उस परिपत्र में बच्चों के शारीरिक और मानसिक दबाव को कम करने के सुझाव दिए गए थे। एनसीएफ 2005 के आधार पर एनसीईआरटी ने नए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तिकाएं तैयार की, जिसे सीबीएसई से संबद्ध स्कूलों ने अपनाया। कई राज्यों ने एनसीएफ 2005 के आधार पर अपने पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तिकाओं में बदलाव किया।

केंद्रीय विद्यालय के नियम

वैसे अभी सारे स्कूलों के लिए यह नियम तो नहीं लागू किया गया है, लेकिन केंद्रीय विद्यालय में बच्चों के बस्ते का बोझ तय कर दिया गया है। देशभर के केंद्रीय विद्यालय इस नियम का पालन करते हैं।

1. इस नियम के मुताबिकए पहली और दूसरी क्लास के बच्चों के बस्ते का वजन 2 किलोग्राम से ज्यादा नहीं होना चाहिए।
2. तीसरी और चौथी क्लास के बच्चों का बस्ते का वजन 3 किलोग्राम से कम होना चाहिए।
3. 5वीं से 8वीं तक के छात्रों के बस्ते का वजन 4 किलोग्राम से ज्यादा नहीं होना चाहिए। नौवीं से 12वीं तक के ऊपरी क्लास के लिए अधिकतम सीमा 6 किलोग्राम तय की गई।

यह है अन्तर्राष्ट्रीय नियम

अंतरराष्ट्रीय नियम के मुताबिक बच्चों के कांधे पर उनके कुल वजन से 10 फीसदी ज्यादा वजन नहीं होना चाहिए। इसको यूं समझें जैसे अगर बच्चे का वजन 20 किलोग्राम है। इसका 10 फीसदी हुआ 2 किलोग्राम। यानी 20 किलोग्राम वजन वाले बच्चे के बस्ते का वजन 2 किलोग्राम से ज्यादा नहीं होना चाहिए। लेकिन हकीकत यह है कि 8वीं क्लास तक के बच्चों को 5 किलोग्राम से ज्यादा वजन ढोना पड़ता है।

सीबीएसई के निर्देश

स्कूल बैग का वजन कम करने के लिए सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकंड्री एजुकेशन (सीबीएसई) ने भी दिशा निर्देश जारी कर रखा है, जो इस तरह से हैं-

1. प्राइमरी क्लास के लिए जरूरत से ज्यादा छात्रों को पुस्तक लेने को नहीं कहा जाए और पाठ्यपुस्तकों की संख्या सीमित होनी चाहिए। नेशनल काउंसिल ऑफएजुकेशन रिसर्च एंड ट्रेनिंग (एनसीईआरटी) ने जो सीमा तय कर रखी है] उससे ज्यादा इसकी संख्या न हो।
2. पहली और दूसरी क्लास के छात्रों के लिए स्कूल बैग न हो और उनको अपना स्कूल बैग स्कूल में छोड़ने की अनुमति हो।
3. पहली और दूसरी क्लास के बच्चों को होमवर्क नहीं दिया जाए। तीसरी और चौथी क्लास के बच्चों के लिए होमवर्क की जगह कुछ और विकल्प दिया जाए।
4. स्कूल बैग के अनावश्यक बोझ से छुटकारे के लिए विवेकपूर्ण टाइम टेबल तैयार किया जाए।

यह है वर्तमान हालात

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) की ओर से विशेष परिपत्र जारी किया गया है। इस परिपत्र में पहली से 10वीं क्लास तक के बच्चों के बस्ते का वजन तय किया गया है-

1. पहली और दूसरी के बच्चों के लिए बस्ते का वजन 1.5 किग्रा
2. तीसरी से पांचवीं तक के बच्चों के लिए 2 से 3 किग्रा
3. छठी और 7वीं के बच्चों के लिए 4 किग्रा
4. आठवीं और नौवीं के बच्चों के लिए 4.5 किग्रा
5. 10वीं के बच्चों के लिए 5 किग्रा

बस्ते के बोझ पर चिंतन जरूरी

वेल डिसिप्लिन्ड एक शब्द है, जो भद्र लोगों के लिए उपयोग किया जाता है। ये असामान्य सा शब्द उन लोगों के लिए था, जो ये मानते थे कि दुनिया में कई सारी चीज़ें हैं, जिनके जवाब हो सकते हैं, लेकिन वो जवाब किसी को नहीं मिल सकते। इसलिए मानव को उन जवाबों को स्वीकार लेना चाहिए, जो मानव समाज को जोड़कर रख सकें। इन सॉफिस्ट लोगों को उन सभी को शिक्षा देने के लिए नियुक्त किया जाता था, जो यूनान की नई गणतांत्रिक व्यवस्था को सुचारू ढंग से चला सकें। नए सवालों को हतोत्साहित करने की प्रक्रिया किसी भी सरकार के लिए सबसे बेहतर साधन हो सकती है। अपनी स्थिति को मजबूत बनाए रखने के लिए। वर्तमान समय मे हमने छोटे छोटे कंधो पर इतनी बड़ी बड़ी जिम्मेदारियां लाद दिया है कि बचपन बिल्कुल खत्म सा हो चुका है।

बढ़ती भेड़चाल में हमने अपने नन्हे मुन्हों के लाइफ स्टाइल को एक तरह से रोबोटिक कर के रखा हुआ है। कुकुरमुत्तो की तरह उगे अंग्रेजी मीडियम के स्कूलो ने काफी हद तक बचपन को खत्म करके रख दिया है। एक अजब सी लूट मची है, खिंचतान है, भागमभाग है, किन्तु इन सबके बीच हमने कभी नहीं सोचा की इतना भार उठाए ये बचपन बचपन कहां रह गया।

लाओत्से कहते हैं कि 'दी लीस्ट गवर्नमेंट इज द बेस्ट'। बस यहीं से सवाल शुरू होता है। मानव सभ्यता का सबसे अलौकिक क्षण कौनसा रहा होगा? एथेंस के एक्रोपोलिस में किसी संधि प्रस्ताव के लिए जब एक एक नागरिक के उठे हुए हाथों की गिनती की जा रही होगी? एक नागरिक खुद को प्रशासन का हिस्सा समझ रहा होगा। ओलम्पस में किसी ग्लैडिएटर की जान इसलिए बख्श दी गई होगी कि उसने जनता का दिल जीत लिया होगा? पर उस दिन जनता क्या नशे में रही होगी, जब उसने सुकरात को जहर का प्याला पकड़ा दिया? शायद वो नशे में थी, सब कुछ जान लेने के नशे में, जो जानती थी उसके विश्वास के नशे में, जिस पर विश्वास था उस विश्वास के डगमगा जाने के डर के नशे में। पर इससे कुछ बदल नहीं जाता। वो दिन अलौकिक था, जब मनुष्य को निर्णय की स्वतंत्रता मिली होगी। इस अलौकिकता के मोल में हजारों सुकरातों को होम हो जाना पड़ेगा। वो दिन अलौकिक था, जब मनुष्य ने मनुष्य होने के मूल्य का अनुभव किया होगा। उस दिन वो रात अपनी देहरी में बैठ कर पूरी मानव जाति के लिए अपनी विशिष्ट योजनाएं बना रहा होगा। वो तय कर रहा होगा कि एक दिन वो सृष्टि के हर हिस्से की गतिविधियों को किस तरह नियंत्रित करेगा। मानव को अपनी निर्णय क्षमता पर गर्व हुआ होगा। सोचिए उसने आगे क्या किया होगा, क्या फिर कभी उसने अपने ज्ञान पर संदेह किया होगा? निश्चय ही वह मनुष्य के गुलामी के शुरुआत के दिन थे। शासन का आदी हो जाना कितना गौरवपूर्ण रहा होगा। जरा सोचिए कि मानव ने अपने अनगिनत प्रयास विभिन्न तरह के शासन स्थापना में लगा दिए, दुनिया के कई खूबसूरत दिमाग शासन प्रणालियों की व्याख्या में खप गए। गुलामी भोगने की परिकल्पना को मुक्त होने सरीखी उपमाओं से नवाजते हुए मानव का मूल स्वरूप कभी आंदोलित नही हुआ? एक सुंदर और मुक्त मष्तिष्क कैसा होता होगा, प्रकृति की किन चीजों को वह दुनिया के खूबसूरत उपहारों में गिनता होगा? उसके ईश्वर की वेशभूषा कैसी होगी। उसका ईश्वर होगा भी या नही कौन जानता है।

दुनिया सॉफिस्टों से भर चुकी है। ज्ञान धाराओं में प्रवाहित होकर सुंदर दिमागों पर छाता चला जा रहा है। सब कुछ तराश देने की होड़ में मनुष्य अपनी जाति के अगले पायदान पर कदम रखने के लिए बेकाबू है। एक दिन सब कुछ ठीक वैसा ही हो जाएगा, जैसा कि कुछ लोगों ने तय कर लिया होगा। तब आप अपनी मौलिकता के लिए लड़ना बन्द कर चुके होंगे। हताश होना कोई नहीं प्रक्रिया नहीं है, कई सदियां हताशा से भरी रही हैं, जहां मानव शाब्दिक परछाई बना खुद के जीवन को सांचों में ढालने के लिए व्यस्त था।

आज इस पूरे जगत में कोई सबसे व्यस्त है, तो वो है इंसानी सोच। जिसने स्तरहीन कार्यो और अपने अकर्मक सोच से पूरे मानव जाति के अस्तित्व को संकट मे डाल दिया है। हमने क्या किया, क्या पाया, क्या बना रहे, ये सोचने के बजाय ये सोच रहे कि अपनी नस्लो को कितनी अंग्रेजी पढ़ा दे, कितना जल्दी उम्र से पहले बड़ा कर दें और कितना तेज होकर ब्रह्माण्ड को मुट्ठी में कर लें, किन्तु ये सब मानसिक क्षीणता है, जो हमारे बचपन, युवावस्था और प्रौढ़ता को गर्त में ले जा रही। चिंतन की आवश्यकता है कि अपने खत्म होते बचपन को कैसे बस्तो के बोझ से निकाले, कैसे इन नन्हे नन्हे हाथो को फिर से आसमां की ओर उठा कर ये कहे कि हे! भगवान हम सब आप की सत्ता में आपके ही सानिध्य में जीवन का रस पी रहे, हमारा सर्वथा कल्याण करें।

पंकज कुमार मिश्रा
जौनपुरी
8808113709

Contradictory Behaviour in Children

Pondering upon the contradictory behaviour of children, everyone is in a state of dilemma whether to understand the influence of external environment or home environment. In an outrage, one tends to behave differently without realizing the impact of the same on other people or surroundings.

This can't be justified as situational behaviour as the adults are expected to have a strong control over their wrath rather than being in its control. Once a small girl left her house with her younger brother saying, "they will keep on fighting with each other, they don't care for us. We will go somewhere else." Can we imagine the stress the girl had? Could anybody take the responsibility of this result? No, but the parents too must have blamed the TV or other learning sources for the result.

How often do we realize the impact of adult's behaviour on the innocent mind of children? The words spoken to each other in anger, the verbal fights, the inappropriate behaviour, the indifferent attitude, a humiliating environment at home and many other such negativities arising from different corners and ultimately disturbing the child psyche. The parents, by putting themselves in controversies and by making mountains out of mole hills, rarely understand that the children have to bear the pain of such activities, which results in the feeling of insecurity. Their dreams shatter, they lose confidence, their capacity to think about future and moreover they get a lifelong impression of such incidents.

The children are taught to follow certain norms such as honesty, truthfulness, hard work, empathy etc; but ironically, they get ample examples which go contradictory to the norms and in coherence with the prevailing circumstances. Adults in the family or society or even on roads do not confirm the same norms. Furthermore, they at times approach the school and plead teachers to look into the changing behaviour of the child, asking them to solve their crisis. As the child does not listen to the parents, the parents are also baffled at such a stage, so to seek solutions they approach schools but the parents will have to display maturity in front of their children by putting the ego far away to shape bright future of our children.

Parents have to critically analyse their behaviour and actions as this kind of environment turns the child into a violent human being. It is not only the furore between parents but also within the family members like mother and son, daughter-in-law and mother-in-law or any such relation. So, to find some solace, attention seeking activities increase. Such children bear split personalities and can't have a balanced mindset, which is required in life to grow. The adults in the family will have to be careful not to criticize, blame or incite anybody in the presence of children as it will sow the seed of negativity in nature.

A father should not talk to his father disrespectfully or argue with him. Similarly, a mother should be polite and respectful for her mother-in-law and other adults of the family to teach her children those values that are often found missing. This would be leading by examples, for a united and happy home. The popular story of blanket proves to be so true here, in which, when the father purchases a blanket for his father, the son asks him to buy two blankets. Baffled, the father

asks him the reason, which the son states that when he (his father) grows old and is sent to old age home, he would need it just as his grandfather requires it.

Teachers may also play an important role in identifying the problem and deal with it. This will transmit positivity. Since the teacher is also aware of the behavioural challenges, she can give concrete counselling to the child as well to his parents by taking them into confidence. The teachers and the parents have to understand these changes and act sensibly. They need to guide and support them, nurture their talents, hone their skills and lead them with examples. No doubt these children are the store houses of energy that needs to be directed with utmost precision. Although, children fantasise about sports champions, actors or freedom fighters as their role models yet, parents top this list. So, assist your children to adopt a balanced approach rather than being contradictory, realize your roles and help your children to become humble and worthy citizens of the country.

Manisha Lashkari
Principal
Smart Study
International School
Nathdwara

"SHREE" Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

टैगोर साइंस एकेडमी पर अवैध संचालन का आरोप, एक माह बाद भी जांच नहीं

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी को टैगोर साइंस एकेडमी के खिलाफ ज्ञापन देते निजी स्कूलों के संचालक व प्रधानाचार्य।

निजी स्कूल संचालकों के ज्ञापन पर कलक्टर ने दिए जांच के आदेश

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमंद. कांकरोली से भीलवाड़ा राजमार्ग पर प्रतापपुरा के पास स्थित टैगोर डिफेंस एकेडमी/ टैगोर साइंस एकेडमी के विरुद्ध राजसमंद जिला निजी शिक्षण संस्थान समिति द्वारा जिला कलक्टर अरविंद पोसवाल व मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी मधुसूदन व्यास को ज्ञापन दिया गया। ज्ञापन में आरोप है कि एकेडमी को न तो शिक्षा विभाग से मान्यता ले रखी है और ही आवासीय छात्रावास संचालित करने की कोई अनुमति है। इसके बावजूद अवैध तरीके आर्थिक लाभ के उद्देश्य से कतिपय अन्य निजी शिक्षण संस्थानों से सांठ-गांठ कर विद्यार्थियों को गलत तरीके से प्रवेश देकर नियमानुसार संचालित शिक्षण संस्थाओं की छवि धूमिल करने का प्रयास कर रहे हैं। इस तरह से छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। शिकायत के बाद जिला कलक्टर के आदेश पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ने जांच कमेटी का गठन कर दिया, मगर अभी तक जांच लंबित है।

राजसमंद जिला निजी शिक्षण संस्थान समिति के बैनर तले सोफिया पब्लिक स्कूल, मयूर पब्लिक स्कूल, गांधी सेवा सदन, गायत्री संस्कार शाला, ज्ञानोदय उच्च माध्यमिक विद्यालय आमेट, आलोक उच्च माध्यमिक विद्यालय राजसमंद, सुभाष पब्लिक स्कूल धोइंदा, गायत्री पब्लिक स्कूल धोइंदा सहित कई निजी शिक्षण संस्थाओं के निदेशक व प्रधानाचार्यों ने 8 जुलाई 2019 को जिला कलक्टर को शिकायत की। ज्ञापन में यह भी आरोप है कि श्री द्वारकाधीश कॉलेज प्रतापपुरा द्वारा ही उनके भवन में टैगोर साइंस एकेडमी को संचालित करने के लिए स्थान उपलब्ध करवा दिया। आरोप है कि अभिभावक व छात्रों को भ्रमित कर अन्य निजी स्कूल में प्रवेश दिया। कोचिंग की आड़ में आवासीय छात्रावास खोला गया, जहां बच्चों के रहने, खाने-पीने के साथ कोचिंग की सुविधा भी दी जा रही है। हालांकि आवासीय छात्रावास को भी अब तक सरकार से मान्यता नहीं मिल पाई है। दूसरी तरफ शिकायत के बाद शिक्षा विभाग द्वारा जांच कमेटी का गठन कर दिया, मगर एक माह बाद भी शिकायत की जांच लंबित है। इसके चलते वास्तविकता सामने नहीं आ पाई, जिससे आमजन में संशय की स्थिति बनी हुई है।

इस तरह दीवारों पर किया था प्रचार

स्कूल बता कर किया था प्रचार, जिसे मान्यता के अभाव में अब बताया कोचिंग सेंटर।

मान्यता की फाइलें विचाराधीन

टैगोर साइंस एकेडमी द्वारा आठवीं तक स्कूल की मान्यता के लिए प्रारंभिक शिक्षा विभाग में आवेदन कर दिया। विभाग द्वारा जांच के बाद मान्यता दिलाने की फाइल विचाराधीन है। दूसरी ओर, आवासीय छात्रावास के लिए भी आवेदन कर रखा है, जहां विचाराधीन है।

अभी तक जांच रिपोर्ट नहीं आई

शिकायत आने पर जांच के लिए माध्यमिक शिक्षा विभाग के जिला शिक्षा अधिकारी को जांच के आदेश दिए हैं। जांच रिपोर्ट अभी तक प्राप्त नहीं हुई और जांच पूर्ण होकर तथ्यात्मक रिपोर्ट आएगी, तब उसी आधार इस प्रकरण में अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

मधुसूदन व्यास, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी राजसमंद

उचित दर पर बेहतर शिक्षा ही ध्येय

राजसमंद में न्यूनतम दर में छात्रों को बेहतर शिक्षा देने के उद्देश्य से कोचिंग संस्थान प्रारंभ किया है। इससे कई छात्र कोचिंग के लिए आए है, जिसकी वजह से निजी शिक्षण संस्थानों द्वारा तथ्यहीन शिकायत की गई है। स्कूल और छात्रावास की मान्यता के लिए आवेदन कर रखा है, जो जल्द ही मिलने वाला है। निजी स्कूलों द्वारा गलत तरीके से प्रचारित किया जा रहा है, जो बेबुनियाद है। अभिभावक- छात्रों के साथ कोई धोखा नहीं हुआ है। छात्र नियमानुसार सूर्योदय पब्लिक स्कूल एमड़ी में अध्ययनरत है, जो स्कूल समय के बाद कोचिंग संस्थान पर आते हैं। स्कूल समय में कोचिंग कराने का आरोप भी गलत है।

अर्जुनसिंह चारण, संचालक टैगोर साइंस एकेडमी प्रतापपुरा

कुछ समय भवन में चला

हमारे कॉलेज भवन में पन्द्रह दिन तक के लिए टैगोर साइंस एकेडमी संचालित हुई थी। फिर खाली करवा दिया है। अब वहां हमारे कॉलेज की बीए-बीकॉम की क्लासे चल रही है।

सुशीला असावा, प्राचार्य श्री द्वारकाधीश कॉलेज प्रतापपुरा राजसमंद

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..

अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

आपके शहर व गांव से जुड़ी मूलभुत समस्या, नवाचार, आयोजन, मुद्दे, लेख, चुटकले, कहानी, कविता हमें भेजे

E-Mail : jaivardhanpatrika@gmail.com

तीखी मिर्ची

ऑफ द रिकॉर्ड :
जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिएं-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

सांप को दूध आखिर कब तक

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

श्रावण मास में सांप बहुत निकलते हैं और इस माह में सांप को दूध पिलाना भी शुभ होता है और कहते है सांप को दूध पिलाने से मनोकामना भी सिद्ध होती है। जैसे अब तक होती रही है, तो आज मैंने भी एक सांप को दूध पिलाने की कोशिश की। सांप मुझे समीप देखते ही चौंक गया, उसे मुझसे इस प्रेम व्यवहार की बिल्कुल भी आशा नहीं थी। क्योंकि वह जानता है मैंने बचपन से जहां भी जहरीले सांप देखे, उन्हें उसी समय कुचल दिया है। आज भी वह भययुक्त संकोच में था, दबी आवाज में बोला, तुम आज कैसे आ गए। मैंने कहा आपको भयभीत होने की जरूरत नहीं है। मैं आज तुम्हें दूध पिलाने आया हूं और चाहता हूं कि मेरी भी मनोकामना सिद्ध हो जाए। सांप ने भय को त्याग कर अपने फन को थोड़ा और बढ़ाया और बोला, तुम हमारी प्रजाति को नष्ट करने में लगे हो और आशा करते हो कि तुम्हारी मनोकामना सिद्ध हो, यह संभव नहीं है। हम वो जहरीले सांप है, जो सदैव अपने दुश्मनों को डसकर अपने संरक्षक को मालामाल करते आये हैं, जिसने भी हमें दूध पिलाकर पाला, उन्हें किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ा।

यह सुनकर मुझे थोड़ा क्रोध आया, मगर अपने स्वभाव के विपरीत पुन: अनुनय भाव से बोला, यह बात सच हैं कि आपने सभी की मनोकामना पूरी की है। अत: मेरा भी एक आग्रह स्वीकार करें और यह दूध पीये। सांप जो सदा भयभीत रहा, मगर आज मुझे इस अनुनय मुद्रा में देखकर प्रसन्न हुआ और बोला, मुझे पहले यह बताओ कि तुम क्या चाहते हो। मैंने कहा कि मैं यह चाहता हूं कि अब आप अपना जहर त्याग कर जन मानस को भयमुक्त करें। आपके कारण जनता सदैव दु:खी है। आप जब चाहे, जहां चाहे, अपने जहर की वर्षा कर निर्दोष लोगों को मार देते हैं। पूरे देश की जनता आपके जहर से भयभीत रहती है। आज मुझे आपकी जहर की थैलिया निकाल कर दें और जन सामान्य को अभय दान दें।

अब तक मेरी बातों को शान्ति से सुनने वाला नाग अचानक क्रोध से तमतमाने लगा। उसने अपने फन के एक झटके से दूध की कटोरी को फेंक दिया और क्रोध में फन को पहले से अधिक फैलाया और बोला। हम जनम जात टेढ़े है। सीधी बातें सुनना हमारी आदत नहीं है। हमें तुम जहर मुक्त करके सांप से इन्सान बनाना चाहते हो। तुम इन्सानों की जिन्दगी भी क्या कोई जिन्दगी है। सदा कमा कमाकर हमारे लिए दूध का इन्तजाम करते हो। हमारे भाई जब चाहे आप लोगों को इस दुनिया से विदा कर देते हैं। तुम असहाय लोग कुछ नहीं कर सकते। हम जहर फेंकना छोड़ दें, यह कदापि नहीं होगा। अब मेरे पास उसे समझाने का कोई चारा नहीं बचा था। मैंने भी अब सोच लिया कि आखिर कब तक इन जहरीले नागों को दूध पिलाया जाए। मैंने तुरंत पूरी ताकत के साथ अपने नुकीले जूते के नीचे उसके फन को दबा दिया। कुछ देर अपनी पूंछ हिलाकर छटपटाने के बाद असहाय स्थिति में बोला, मुझे जीवन दान दे दो, अब तुम चाहोगे वही होगा। सांप की प्रजाति अब जहर नहीं उगल सकेगी, मगर अब तक वो परलोक पहुंच चुका था।

डिबेट का फन

जंगल नरेश अपनी राजसी गुफा के विशेष कक्ष में गद्देदार सोफे में हाथ भर धंसे हुए थे। सामने की मेज पर एक प्लेट में फ्राई ड्राई फ्रुट और नक्काशीदार जाम में सोमरस लबालब भरा हुआ रखा था। ठीक सामने की दीवार पर एक बड़ी सी एलसीडी लगी हुई थी, जो कि वनराज के टाइम पास करने का साधन थी।

दिनभर आने वाले प्रोग्राम्स का अवलोकन करना ही उनका एकमात्र महत्वपूर्ण कार्य था। वैसा नहीं था कि उनके पास अन्य कोई कार्य न हों। कक्ष के कोने में लगे फाइलों का ढ़ेर उनके पंजे का चुंबन, चिह्न पाने को कब से तरस रहा है। कई फाइलें तो ऐसी भी थीं, जो दूसरों के भविष्य से संबद्ध थीं और एक ही चिह्न उनका सुखद भविष्य निरूपित करता, परन्तु श्रीमान जी जब दूरदर्शन से फुर्सत पाएं तब तो उन्हें दूसरे के भविष्य दर्शन होंगे।

उन्होंने एक दिन टीवी पर लाइव डिबेट देखा तो उनके मन में उत्सुकता ने सुगबुगाहट ली कि क्यों न ऐसी डिबेट हम भी अपने राज्य में करवाएं, तब तो लाइव नाम सार्थक होगा। उन्होंने तुरंत पास में पड़ी घंटी बजाई तो लंबी छलांग भरता प्यून बंदर आया और हाथ जोड़कर आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा। महाराज ने फरमाया– सूचना मंत्री को अंदर भेजो। जी महाराज! इतना कहकर बंदर बाहर निकल गया। इतने में बगल में एक फाइल दबाए सूचना मंत्री भालू आकर सलाम फरमाकर बगल के सोफे पर धंस गए। महाराज ने आदेशित स्वर में कहा– मंत्रीजी! मेरी इच्छा है कि महल में एक लाइव डिबेट का कार्यक्रम करवाया जाए। किसी चैनल से संपर्क कीजिए। मंत्री बोले– जैसी आपकी आज्ञा महाराज।

भालू ने बाहर निकल चैनल्स से संपर्क करना आरंभ किया। कुछ ने डिबेट का मुद्दा और उद्देश्य पूछा तो कुछ ने महाराज का नाम सुनकर चौंक गए और बहाना बना दिया कि समय नहीं है। तब उन्होंने दुनिया के सबसे तेज तथा विश्वसनीय खबरों का दावा करने वाले चैनल को फोन घुमाया।

मंत्री जी ने बताया कि महाराज का मन लाइव डिबेट देखने का है। क्या आप इसका इंतज़ाम कर सकते हैं? चैनल वालों ने कहा बिल्कुल कर देंगे, यह तो हमारे बांए हाथ का काम है। आपके महाराज हमारे स्टूडियो में आएंगे तो हमारा सौभाग्य होगा। इस पर मंत्री जी ने कहा– हमारे महाराज आएंगे नहीं, आपको आना पड़ेगा। चैनल ने कहा कि कोई बात नहीं, जैसा आपके महाराज का आदेश, हम आ जाएंगे। इसी बहाने जंगल की सैर हो जाएगी और जंगल वासियों से मुलाक़ात भी हो जाएगी। मंत्री जी ने कहा कि डिबेट का कोई ठोस मुद्दा है नहीं, पर महाराज की इच्छा सर्वोपरि है। चैनल का उत्तर विश्वास से लबरेज और बड़ा ही ठोस था कि आप उसकी बिल्कुल भी चिंता न करें।

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

हम लोग इस फील्ड के अनुभवी हैं, हम बाल से खाल निकालना और तिल को ताड़ बनाना अच्छी तरह जानते हैं ।

अगले दिन गुफा के प्रांगण में बड़े- बड़े कैमरे लग गए और एक विशाल वट वृक्ष के चबुतरे पर सोफे लगा दिए गए तथा सामने सभी जानवरों को जमीनासीन कराया गया।

डिबेट प्रारम्भ हुई, जिसका विषय था कुत्ते- बिल्ली का वैर, क्यों हैं दोनों गैर। महाराज को विषय बड़ा मजेदार लगा। हालांकि इससे भी बड़े और महत्वपूर्ण विषय थे, जैसे- जंगलों की अवैध कटाई, जंगली पशुओं का विनाश, औद्योगिकीकरण का शिकार जंगल, विलुप्त होती पशु प्रजातियां आदि। परन्तु ऐसे हितकारी मुद्दों में वह मसाला कहां जो इस विषय में था।

एंकर ने कटीली मुस्कान के साथ एक्सपर्ट पैनल का परिचय कराया कि प्रोग्रेसिव फॉरेस्ट यूनिवर्सिटी के साइकोलॉजी विभाग की प्रोफेसर डॉ. लोमड़ी जी, क्राइम विशेषज्ञ श्री नागराज जी, कुत्ता एशोसिएशन के अध्यक्ष श्री डॉगी जी, सेव कैट फाउंडेशन की लीगल एडवाइजर मिस किट्टी जी। आज के जुझारू पैनल का हम अपने लोकप्रिय कार्यक्रम जंगल में खलमंडल में हार्दिक स्वागत करते हैं।

इतना कहना था कि टीवी पर झलक दिखलाने के लिए आतुर ऑडियंस ने तालियों से जंगल को गुंजायमान कर दिया। एंकर ने पैनल पर अपनी नशीली नजर डाली, जिसका प्रत्येक सदस्य अपना सा प्रतीत हुआ। क्योंकि विषय कोई भी हो इनका आना तय था। सभी हैरान थे पैनल की ज्ञान परिधि और अभिव्यक्ति क्षमता पर। अंधाधुंध तरीक़े से धुआंधार बोलना तथा बेसिर पैर के तर्क देना इनकी बापौती थी।

एंकर ने पहला सवाल डॉगी से पूछा कि आप बिल्लियों से क्या इसलिए दुश्मनी रखते हैं कि लोग बिल्ली को महाराज कहते हैं और आपको फूफा नहीं कहते है? महाराज इस प्रश्न पर खुश होकर इतनी जोर से दहाड़े कि एंकर ने माइक और पसीना दोनों छोड़ दिए। डॉगी कुछ बोलता कि इससे पहले एंकर ने माइक नागराज के फन में स्पर्श कराकर लोमड़ी के जबड़ों पर दे मारा। इससे पहले कि लोमड़ी कुछ बोलती माइक डॉगी को सूखी हड्डी की तरह थमा दिया गया। यही क्रम लगभग एक घंटा चलता रहा, कैमरामैन कैमरे को घुमा घुमाकर थक गया। महाराज के हंसते- हंसते दर्द होने लगा, जो बुद्धिमान दर्शक थे। उनको टाइम की बर्बादी का आभास होने लगा था।

एंकर ने डॉगी को इस कदर उकसाया कि वह किट्टी के प्रति पर्सनल हो गया। किट्टी ने भागकर पेड़ पर चढ़कर जान बचाई। एक और डिबेट बेनतीजा टीआरपी के लिए संपन्न हो गई।

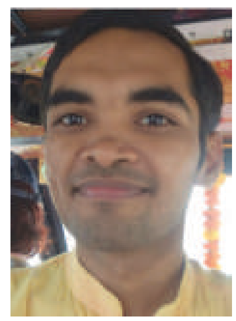

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
असिसटेंट प्रोफेसर
(हिन्दी विभाग जगद्गुरु रामभद्राचार्य)
विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट, उत्तरप्रदेश
टीवी पोस्ट हसवा, फतहपुर(उत्तरप्रदेश)
मो. 86041-12963

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से
आप जयवर्द्धन
मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं
वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।
भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

रामबाबू की पीठ पर जीवनभर मिट न पाए अंग्रेजों के घोड़ों की टापों के निशान

श्री द्वारकाधीश की पावन नगरी कांकरोली के धोरा मोहल्ला में सनाढ्य परिवार में श्री गिरधारीलाल शर्मा के घर 15 दिसम्बर 1911 को श्रीमती रमा बाई की कोख से एक ऐसे क्रांतिकारी बालक का जन्म हुआ, जिसने स्वतन्त्रता आन्दोलन में इस कांकरोली का नाम अमर कर दिया। वैसे तो कांकरोली के कई नौजवान स्वतन्त्रता आन्दोलन में थे, पर सरकारी आंकड़ों में सिर्फ दो ही कांकरोली के लोग हैं। एक श्री रामबाबू शर्मा व दुसरे सुन्दरलाल जी देवपुरा।

बचपन से ही स्वच्छन्द विचारों के धनी रहे श्री रामबाबू शर्मा व्यायामशाला में कसरत करना और तलवारबाजी के भी बड़े खिलाड़ी थे। दोनों ही हाथों से तलवारबाजी की कला में पारगंत थे। लठबाजी में भी उनका कोई सानी नहीं था। ऐसी ही अनेक कलाओं में वे किशोरावस्था में ही निपूर्ण हो चुके थे। उसी काल में महात्मा गांधी के भारत के स्वतन्त्रता की मांग ने भी जोर पकड़ा और आप आदरणीय मोतीलालजी सेजावत से प्रभावित हो भीलों और आदिवासियों की क्रांति तथा बिजोलिया के किसान आन्दोलन ने आपको इतना प्रभावित किया कि आपके मन में देश को आजाद कराने के लिए अपना तन-मन-धन सब न्यौछावर करने का संकल्प ले लिया।

श्री रामबाबूजी शर्मा ने जल्दी ही अपने आस-पास के स्थानीय स्वतंत्रता आन्दोलनकारियों से सम्पर्क साध लिया। वे प्रजा मण्डल जो उस समय देश की आजादी के लिए संघर्ष करने वाली संस्था थी। उसके सदस्य बन गए, जहां उनका सम्पर्क श्री मोतीलालजी तेजावत, श्री माणकलालजी वर्मा, श्रीमती नारायणी देवी, भूरेलाल जी बया, नारायणलाल जी प्रोफेसर, श्री नरेन्द्रपालसिंह चौधरी, फतहलाल जी बापू, किशनलाल जी शर्मा व देवेन्द्रजी कर्णावट आदि अनेक स्वतंत्रता सेनानियों से हुआ। वे उनके साथ स्वतंत्रता आन्दोलन के हर क्रियाकलाप में चाहे वो जुलूस हो या गांव में जाकर लोगों को जागृत करना या अन्य कोई भी देश भक्ति का कार्य वे करने लग गए।

श्री देवेन्द्र कर्णावट ने अपनी पुस्तक में एक जगह श्री रामबाबू शर्मा का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि श्री रामबाबू ऐसे व्यक्ति थे, जो सदैव क्रान्तिकारी विचारों के धनी रहे। वे हमारे मिशन में गुप्तचर की भूमिका में थे। गुप्त दस्तावेज लाना, ले जाना, उन्हें सही स्थान पर पहुंचाना उनके जिम्मे था। एक बार अंग्रेजी हूकुमत के नामी पुलिस सुपरीटेंडेन्ट सुन्दरलाल उनके निकट पहुंच गए। वे साईकिल पर जा रहे थे, जब भारी पुलिस दल बल ने उन्हें रोका और तलाशी लेनी चाही तो रामबाबू ने आव देखा न ताव, चटाख से एक जोरदार चांटा सुपरीटेंडेन्ट पुलिस को जड़ दिया और पुलिस व सुपरीटेंडेन्ट समझते, इससे पहले ही वे भाग गए। उनके पास जेब में क्रांतिकारी से प्रेरित कागजात थे।

स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान लगभग 2-3 बार जेल भी गए। अनेक यातनाएं भी आपने सही जुलूसों के दौरान लाठीचार्ज में आपके सिर पर कई गंभीर चोटे भी आई। जिसके निशान मृत्यु तक उनके सिर पर थे। अंग्रेजों की बटालियन के घोड़ों की टापों के निशान उनकी पीठ व गर्दन पर मृत्युपर्यन्त रहे। आजादी के बाद भी आप नौजवान पीढ़ी को सुधारने का प्रयास करते रहे। आपने जहां आज नामदेव मंदिर है, वहां पहले एक अखाड़ा हुआ करता था, उसे द्वारकेश व्यायामशाला का नाम दिया और कई नामी पहलवान तैयार किए। अरूणकान्तजी उस्ताद वहीं की देन है, जिन्होंने आगे जाकर द्वारकेश राष्ट्रीय व्यायाम शाला को गति प्रदान की। हनुमान मन्दिर के पास ही आप बंगले में बालकों को पढ़ाया भी करते थे। आपने गांधी सेवा सदन में बच्चों को पढ़ाने का मृत्युपर्यन्त तक काम किया। आपके लड़के श्री कृष्णचन्द्र शर्मा जिनका अब स्वर्गवास हो चुका है, उन्हें भी एक अच्छा इंसान बनाने की आपने भरपूर कोशिश की।

23 अप्रेल 2001 को स्वतन्त्रता आन्दोलन के इस वीर सपूत ने अंतिम सांस ली और अपनी अमिट यादें छोड़ इस दुनिया को अलविदा कह गए। पूरे राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार हुआ। मेरे गांव के ऐसे महान क्रांतिकारी स्वतन्त्रता सेनानी को शत-शत नमन् और हार्दिक श्रद्धाजंलि।

आजादी के बाद भी नहीं बना स्वतंत्रता सेनानी देवपुरा के सपनों का भारत

अपने देश को आजाद करने में अनेकानेक देशभक्त, स्वतन्त्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहूति दी। कई यातनाएं सहन की, लाठी-गोली खाई, कई तरीके की कठिनाई सहन की, पर आजादी के इन दीवानों ने आखिरकार 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों को इस देश से भगाकर समस्त देशवासियों को आजादी की खुली हवा में सांस लेने का मौका दिया।

आजादी की इस लड़ाई में देश के हर प्रान्त, हर शहर व गांव में कई स्वतंत्रता सेनानियों ने इस स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना योगदान दिया। राजसमंद भी इस स्वतन्त्रता आन्दोलन में पीछे नहीं रहा। राजसमंद के भी अनेकानेक सपूतों ने आजादी की इस लड़ाई को लड़ने में कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ी। कांकरोली के भी श्री रामबाबू शर्मा व श्री सुन्दरलालजी देवपुरा ने इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर मेरे गांव कांकरोली को गरिमा प्रदान की।

श्री देवपुरा का जन्म केलवाड़ा निवासी श्री फतहलालजी देवपुरा के एक साधारण से परिवार में माता श्रीमती बख्तावरी बाई की कोख से 28 नवम्बर 1923 को हुआ। बचपन गांव में ही बीता, पर शिक्षा दीक्षा आपकी उदयपुर में हुई। बाल्यकाल से ही देशभक्ति की भावना आपके मन में थी। युवा होने पर जब आप उदयपुर अध्ययन के लिए गए, तो वहां स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रणी नेता श्री माणिक्यलाल वर्मा की प्रेरणा पाकर देशभक्ति की भावना आप में जाग उठी, और आप श्री हीरालालजी देवपुरा, इन्द्रलालजी वेद के साथ गांव-गांव, ढाणी-ढाणी जाकर अंग्रेजों के खिलाफ प्रचार सामग्री बांटने में जुट गए। गांव में विरोध जुलूस निकालने लगे और ऐसे अनेक कार्यक्रमों में भाग लेने लगे, जो स्वतंत्रता आन्दोलन का अहम हिस्सा होता था।

सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में अंग्रेज सरकार के खिलाफ प्रायोजित क्रांतिकारी जुलूस में अनेक शीर्ष नेताओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भाग लिया और वे गिरफ्तार कर लिए गए। 24 अगस्त 1942 से 2 सितम्बर 1942 तक आप उदयपुर केन्द्रीय कारागृह में बंदी रहे। कारागृह से छूटने के बाद भी देश आजाद होने तक आप सक्रिय स्वतंत्रता आन्दोलन के कार्यकर्ता के रूप में कई आन्दोलनों से जुड़े रहे और देश की आजादी तक आप देश को आजाद कराने में सक्रिय रहे।

आजादी के बाद आप जोधपुर और जयपुर में एक फिल्म वितरक कंपनी में कार्यरत होकर अपना जीवन-यापन करने लग गए, पर अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद वे फिर कांकरोली में आकर बस गए। जब मैं उनके बारे में जानकारी प्राप्त करने उनके निवास स्थान गया, तो उनके पुत्र श्री विक्रम देवपुरा ने बताया कि वे आजादी की लड़ाई तक और उसके कुछ बाद तक तो इस आशा के साथ रहे कि अब भारत में खुशहाली होगी, रामराज्य होगा, सच्चा स्वराज होगा, पर धीरे धीरे उनके सपने टूटने लगे और वे उदास से रहने लगे। 17 जनवरी 2017 को अंतिम सांस ली और स्वर्ग सिधार गए। पूरे राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनके पुत्र ने ऐसे प्रयास किए कि उनके पिता के नाम से कोई सड़क या गली का नामकरण हो। उन्होंने कई तात्कालिक नगरपालिका और नगर परिषद के सभापतियों और नेताओं को इस बारे में लिखित और मौखिक तौर पर अवगत कराया, मगर न किसी ने सुना और न ही कुछ हुआ। मेरे गांव के ऐसे वीर सपूत स्वतंत्रता सेनानी को हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफजल
जलचक्की, सलूस रोड कांकरोली
मो. 98284-75288

काव्य कल्पना के कोमल चितेरे अधिवक्ता श्री सालिगराम शर्मा

कहते हैं साहित्यकार, कवि, शायर दिल से सोचता है और आम आदमी के दर्द को महसूस करके उन अहसासों को अपनी कलम में स्याही भरकर कागज पर उतारता है और एक अधिवक्ता दिमाग से सोचता है और अपने पक्षकार के पक्ष में तर्क के साथ ईमानदारी से पैरवी करता है, मगर जब एक व्यक्ति अधिवक्ता के साथ साहित्यकार भी हो और एक साहित्यकार अधिवक्ता भी हो, तो दिल और दिमाग़ दोनों की जुगलबंदी का एक अद्भुत संगम व्यक्तित्व को बहुआयामी बना देता है।

साहित्य समाज का दर्पण भी है और दीया भी है। साहित्यकार यानी सत्य का अर्थ खोजने वाला और एक सच्चा अधिवक्ता भी सत्य का पैरोकार होता है, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् और सत्यमेव जयतें के सिद्धांत पर चलने वाली भारतीय संस्कृति के इस भारत वर्ष में सदियों से अनेक महान विभूतियां जन्म लेती आई है और लेती रहेगी। प्राय: व्यक्तित्व और कृतित्व की समानता से श्रेष्ठ व्यक्ति की पहचान होती है। आज हम बात करते है **माटी का लाल कॉलम** में एक ऐसी गुणी विभूति **श्री सालिगराम जी वकील साहब** के बारे में। इस साहित्य और संस्कृति सेवियों की उर्वरा भूमि कांकरोली में श्री सालिगराम शर्मा का जन्म 10 दिसम्बर 1902 को साधारण शाखद्विपीय ब्राहमण परिवार में रतनलाल जी शर्मा और माता इन्द्रा के पुत्र रत्न के रूप में हुआ। इनके पिता स्थानीय ठिकाना के कोतवाल थे। तब संवत 1974 में गोस्वामी श्रीमति पद्मावती बाई (माजी महाराज) शासन काल में ग्राम कांकरोली में भंयकर महामारी फैली, जिसमें अनेक लोग इस छूत की बीमारी से काल के ग्रास बन गए।

इनके पिताजी का इस बीमारी से देहान्त हो गया। पिताजी की मृत्यु जल्द होने से परिवार की आर्थिक हालत कमजोर होने लग गई। इनके पिता की निष्ठा और कर्तव्य परायण के कारण माजी महाराज (प्रशासन) ने सालिगराम जी को शहर कोतवाल की नौकरी पर रखा। ये नगर की कानून व्यवस्था को नेतृत्व देने वाला महत्वपूर्ण पद था। छोटी सी उम्र में अपने अध्ययन को पूर्ण कर उदयपुर महाराणा की रियासत के अन्तर्गत श्री द्वारिकाधीश मंदिर कांकरोली के तृतीय पीठाधीश को प्राप्त विशेष अधिकारों के अन्तर्गत वे कोतवाल (थानेदार) के पद पर दबंगता के साथ काम करते रहे।

उनका विवाह मोहनीदेवी से हुआ, वो भी धार्मिक प्रवृत्ति की और विदुषी महिला थी। रियायशी ठिकाने की व्यवस्था समाप्त होने पर उन्होंने वकालात की पढ़ाई कर लॉ की डिग्री प्राप्त की और वकालत के पेशे में आ गए। वे न्यायिक प्रतिस्पर्धा के उस दौर में भी निर्धनों व जरूरतमंदो के मददगार रहे। उनमें एक अच्छे अधिवक्ता के सभी गुण मौजूद थे। वे सामने वाले की बातों को अच्छे से समझते और बेहतरीन तरीके से जवाब देते, हमेशा दूसरो पर निर्भर रहने की जगह स्वंतन्त्र होकर सोचते और फैसले लेते थे। बहुत सारी सूचनाओं में अपने काम की जानकारी निकाल कर काम करते थे। तमाम दबाव के बावजूद मजबूत रहना उनका दृढ़ स्वभाव था।

उन्होंने बार एसोसिएशन की पुस्तकों के प्रभारी के रूप में अधिवक्ताओं को व्यावसायिक दक्षता प्रदान करने हेतु पुस्तकों को अपडेट करने का कार्य किया। वे अपने दौर के राजस्व मामलों के विशेषज्ञ थे।

जिरह करने और अपने पक्ष को मजबूती से रखने और बुलन्द आवाज में उनका कोई सानी नहीं था। न्यायाधीशों व सहकर्मी वकीलों के बीच इस रूप में खास पहचान रही। प्रखर अधिवक्ता होने के कारण ही गोस्वामी ब्रजभूषणलाल महाराज ने उनको द्वारकाधीश मंदिर के विधिक मामलों में पॉवर ऑफ ऑटर्नी दे रखी थी।

बहुआयामी व्यक्ति विपरीत धारा में बहने वाली मछली के मानिंद होते हैं। अपने व्यवसाय के विपरीत कहें या उसे अधिक संवेदनशील बनाए रखने की दिशा में उनकी सृजनात्मक के क्षेत्र में सक्रियता ने अहम भूमिका निभाई। वे सुधी कवि हिन्दी, मेवाड़ी के साथ वे उर्दू शायरी के मर्मज्ञ सर्जक थे। कुछ उनकी लिखी डायरी से कवित्त पेश करता हूं, मेवाड़ी रचना की पंक्ति कुछ यूं है–

जूता जूती रांड़ का जूता लेग्या चोर
वे जूता विके पड़े, आपा पेरा और।।

हिन्दी में कुछ बानगी–

आंखों ने आंखों को देखा, आंखों से ही प्यार किया।
आंखों ही आंखों में गुपचुप, बात हुई विचार किया।।
उलझ पड़ी आंखें आंखों में क्यों ही आंखें चार हुई।
कौन कहे किसकी आंखों की जीत हुई, किसकी हारी।।

उर्दू में शेर–

हमने तुमका खूब देखा, हो मिसाल ए आइना।
पीठ पीछे और हो तुम, रूबरू कुछ और हो।।

और भी उनकी लिखी पाण्डुलिपियां जो अभी बिखरी पड़ी है, उनके पुत्र ओम जी ने बताया कि मेरी सरकारी नौकरी होने से मैं इधर उधर शहरों में रहा, सो उनके दस्तावेज को सहेज नहीं पाया। हम पांच भाई होने से उनकी डायरियां किसके पास रह गई। ये पता लगा कर फिर से उनके लिखे साहित्य को ढूंढ कर एकत्र करने की कोशिश करूंगा।

ओम जी शर्मा, शिक्षाविद डॉ. राकेश जी तैलंग और वरिष्ठ कवि अफजल खां जी अफजल ने बहुत जानकारी उपलब्ध करवाई। अफजल जी ने कहा वकील साहब मुझसे बहुत स्नेह रखते थे। वो अक्सर ये शायरी सुनाया करते थे।

मुंह टेढ़ा टेढ़ा किए फिरते हैं आजकल वो
ये हुस्न का रोब है या लकवे की बीमारी है

सालिगराम जी की पहचान एक ऐसे चुंबकीय बुद्धिजीवी के रूप में रही, जो पेशे से वकील, लेकिन हृदय से कोमलकान्त कवि और लेखक के रूप में जाने जाते रहे। वकालत का पेशा कांकरोली नगर के परिवेश में तब अत्यधिक सम्मानजनक व अभिजात्य पेशा था। बाल्यकाल से ही शिक्षा के प्रति रुचिशील परिवार का अनुकूल परिवेश पाकर आपने विधि क्षेत्र में जो उच्च कॅरियर प्राप्त किया ही, समानांतर हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी भाषा में मसिजीवी, चिन्तन, लेखक व रचनात्मकता के अवसर का भी बहुत फायदा उठाया। अध्ययन और अध्यवसाय उनका शौक था, जिसके कारण रेती मोहल्ला कांकरोली स्थित घर के अग्रिम भाग में एक कक्ष में लॉ की पुस्तकों, फाइलों, जवाब, दावों के बीच सभी भाषाओं के अखबारों, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान एकादंबनी नवनीत के साथ स्वरचित कविताओं का पारायण करते देखे जा सकते थे।

अपने समकालीन कवियों, साहित्यकारों और काव्य प्रेमी मित्रों के साथ बैठ जिसमें श्री कंठमणि शास्त्री जी, छन्नू लाल जी, नारायणलाल जी, सोहनलाल जी पगारिया, बड़ोला और कर्णावट परिवार के सानिध्य में सृजनशीलता की दिशा में स्वान्त: सुखाय लिखते रहे। श्री फतहलाल गुर्जर 'अनोखा', अफज़ल खां अफज़ल, अब्दुल जब्बार और कमर मेवाड़ी जैसे तब के युवा कलमकारों के साथ काव्य शास्त्र विनोदेन के प्रसंग स्मरणीय है।

श्री द्वारकेश राष्ट्रीय साहित्य परिषद् के साथियों दामजी सुदाम, अरूणकान्त सांचीहर, मुंशी इस्तियाक साहब, रामबाबू जी शर्मा और इनके भाई देवीलाल जी के साथ काव्यरस का आंनद काव्य गोष्ठियां करके लिया करते थे।

आदमी बुलबुला है पानी का, जीवन की यही कहानी है, जन्म और मृत्यु , वो सत्य है जिसके बीच ज़िन्दगी आती है चली जाती है, जन्म की इक दिन मृत्यु निश्चित है, आदमी मुसाफिर है आता है जाता है, आते जाते रस्ते में यादें छोड़ जाता है... वो भी अनेक यादों के साथ भरापूरा परिवार छोड़ 23 मई 1995 को लम्बी उम्र कर दुनिया को अलविदा कह गए। आज भी वकील साहब सालिगरामजी को कांकरोली की जनता अपनी स्मृति पटल पर अंकित रखती है।

शाकद्वीपी ब्राह्मण परम्परा में जिस संस्कारवत्ता के आपने अपने जीवन की शैली बनाया। आपके सुपुत्र राधाकृष्ण, मुरलीधर, श्यामसुन्दर, प्रेमशंकर, ओमप्रकाश व सुपुत्रियां सोहनदेवी, पुष्पा देवी, सह नवीन पीढ़ी उस परम्परा को नए जीवन सन्दर्भो के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।

ये मेरा भी सौभाग्य है कि आपके जीवन के यादगार पलों के जयवर्द्धन पत्रिका के माध्यम से शब्दों में समेटने का अवसर मिला। ऐसी विभूति पर लिखकर मेरी कलम भी धन्य हो गई, युवा पीढ़ी को आपके दिए मार्गदर्शन पर चलने की प्रेरणा मिलती रहेगी। इसी आशा और विश्वास के साथ आपसी महान आत्मा को कोटि कोटि नमन करता हूं।

सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच राजसमन्द
941469-21730

कैसा ये प्यार तेरा ?

हमारे पति हजारों में नहीं, लाखों में एक हैं तुनकमिजाजी के मामले में, गुस्सा तो हर वक्त इनकी नाक पर होता है। हर वक्त लड़ने पर उतारू, मानो स्वयं महान योद्धा राणा सांगा। इन्हें अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर धरा धाम से सिधारे हों।

इनकी एक आदत जो हमें नहीं सुहाती वो गुस्सा होकर गाल फुला लेने की आदत, वो भी अनिश्चितकाल के लिए। हम मना मना कर हार जाते हैं, पर ये जनाब मानें, तब ना। हालांकि गुस्सा तो हमें भी बहुत आता है। इनकी इन हरकतों पर, लेकिन इन्हें मनाने के लिए तो हम हैं, पर हमें मनाने के लिए कोई नहीं। ख़ैर, ये और बात है कि इनके फूले हुए गाल देखकर हमें हमारे मायके में मिलने वाले भोला हलवाई के ख़ास गुलाब जामुन याद आ जाते हैं, देसी घी वाले। अब इन्हें कौन बताए कि ऐसे मायके की मिठाईयां याद करवाना अच्छी बात नहीं।

एक और आदत जो इनकी है, वो बिना किसी वजह के नाराज़ हो जाना। अब एक दिन हमने किसी काम से इनके ऑफिस फोन किया। बस यूं ही हमने पूछ लिया कि काम में बिजी हो क्या ? जनाब छूटते ही बोले– नहीं, समूह नृत्य कर रहा हूं, तुम भी करोगी ?

अब आप ही बताएं कि ऐसा क्या गलत पूछ लिया हमने ? एक बार ये जनाब थैला लेकर निकले। हमने पूछ लिया कि क्यों जनाब बाज़ार जा रहे हैं ? इनका टका सा जवाब था– नहीं, थैला लेकर मछली पकड़ने जा रहा हूं, थैला भरकर लाऊंगा, देखना। उफ! भला कोई इतना बेरूखा कैसे हो सकता है ?

अब एक दिन रात में इन्हें खाने की टेबल पर बैठा देख पूछ बैठी, खाना खाओगे ? नहीं, रोटियां ले आओ, उनकी त्रिज्या नाप लेता हूं। हुंह, खड़ूस कहीं के ! उस दिन दफ़्तर से जल्दी घर आ गए। हमने देखा कि जनाब लेटे हुए हैं। हमने पूछा कि क्यों जनाब सो रहे हैं क्या ? नहीं, मरने की तैयारी कर रहा हूं, तुम्हें कोई प्रॉब्लम है ? खुदा ख़ैर करे, मरें आपके दुश्मन, अरे भई, कोई इतना कड़वा बोलता है क्या ? राम जाने अम्माजी ने खाली करेले ही खाए थे क्या, जब उम्मीद से थीं।

तो एक बार की बात है जनाब मुंह फुलाए बैठे थे अनिश्चित काल के लिए। हमारी मनाने की कोशिशें भी नाकाम थीं हमेशा की तरह। तो हम भी मनाना छोड़ सोने की कोशिश करने लगे। पर नींद को न आना था, न आई। सुबह उठी तो अजीब सी थकान महसूस कर रही थी। पर सुबह के काम, सुबह– सुबह तो एक गृहिणी को मरने की भी फुर्सत नहीं होती। तो हम भी अपने कामों में जुटे थे कि अचानक धम्म से गिर पड़े। फिर क्या हुआ कुछ याद नहीं। आंखें खुलीं तो पतिदेव को घूरता हुआ पाया।

फिर डॉक्टर के चक्कर और फिर तमाम प्रकार के टेस्ट। कितनी अजीब बात है ना कि शरीर में खून है या नहीं, ये जानने के लिए भी ढेर सारा खून निकाल लेते हैं ये टेस्ट लैब वाले। ख़ैर, हम रिपोर्ट लेकर डॉक्टर के पास गए। डॉक्टर ने एनीमिया और लो बीपी बताया। पति ढेर सारी दवाइयों के साथ घर आए। हम घबराए से उनके भड़कने का इंतज़ार कर रहे थे कि तभी पतिदेव ने अपना अनिश्चितकालीन मौन तोड़ते हुए कहा– खून बढ़ाओगी नहीं तो जलाऊंगा कैसे ?

ये क्या था ? पहली बार पतिदेव ने हमसे प्यार से बात की थी। हमारे दिलोदिमाग में घंटियां सी बजने लगीं। अब तक देखी सभी फिल्मों के रोमांटिक दृश्य याद आने लगे। तभी हमारा नशा तोड़ते हुए पतिदेव ने कहा– ज़्यादा खुश होने की ज़रूरत नहीं, दवाएं टाइम पर खा लेना, मैं बार– बार नहीं बोलूंगा। एकदम कड़क अंदाज़ में किसी फौजी की तरह। हमारा सारा नशा घड़ीभर में गायब हो गया। ये जनाब हिदायतें देकर जा चुके हैं ऑफिस और मैं सकते की सी हालत में बैठी हूं। मन में वही मासूम सा सवाल, कैसा ये प्यार तेरा ?

अर्चना आनंद भारती
आसनसोल, पश्चिम बंगाल

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी

होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा, मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।

दिलीप जैन

मो. 9214384205 9602997715

जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर
राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

स्वाधीनता दिवस

के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

JK TYRE & INDUSTRIES LTD.

Superbrand

सादर अनुरोध

पाठकगणों से अनुरोध है कि ज्यादातर पाठकों के **जयवर्द्धन पत्रिका** की वार्षिक सदस्यता पूरी हो चुकी है। इसीलिए वार्षिक सदस्यता के लिए **जल्द 200 रुपए या तीन वर्ष की सदस्यता के लिए 500 रुपए जमा करवा कर** शक्ति स्पोर्ट्स शास्त्री मार्केट कांकरोली अथवा हमारे प्रतिनिधि से रसीद प्राप्त कर सदस्यता नवीनीकरण करवाएं।

संपर्क : 94142-39648

हाथ से हाथ मिले तो महक उठा गुलशन

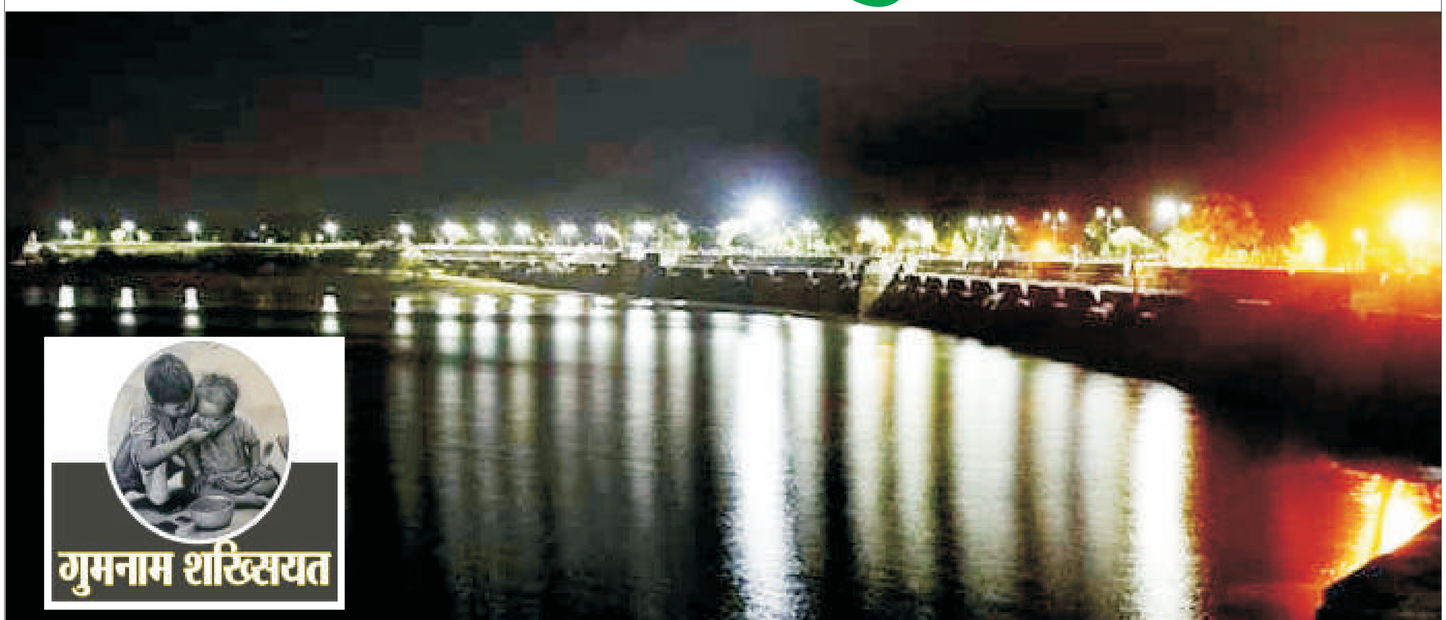

आज हम गुमनाम शख्सियत के कॉलम में कुछ हट के लाए हैं और वह गुमनाम शख्सियत वास्तव में ऐसी गुमनाम शख्सियत हैं, जो प्रकृति के लिए कार्य कर रही है। राजसमंद जिले के कांकरोली शहर मैं सिंचाई उद्यान (इरीगेशन की पाल) एक स्वर्ग सी जगह है, जो किसी को भी अपनी प्राकृतिक और नैसर्गिक सुंदरता से अपना दीवाना बना देती है।

आजकल भागदौड़ वाली जिंदगी में कुछ लोग सुकून की तलाश में सुबह जल्दी उठकर निकल पड़ते हैं। उस जगह की ओर, जहां प्रकृति ने सबके लिए एक खूबसूरत जहां बना रखा है, इरीगेशन पाल पर अल सुबह करीब 4 बजे से लोगों का आना शुरू हो जाता है, जो निरंतर चलता रहता है रात के 12 बजे तक। राजसमंद के हर तबके के लोग वहां अपनी सेहत और सुकून की तलाश में आना नहीं भुलते हैं। बड़े से बड़ा व्यापारी और छोटे से छोटा व्यक्ति साथ चलता है, तो लगता है कि सभ्य भारत का सही मायने में समाज यही बसता है।

10 साल पहले की स्थिति और आज की स्थिति बहुत बदल चुकी है। कई स्वयंसेवी संस्थाओं ने वहां आने वालों के लिए बैठने के लिए बहुत ही अच्छी लोहे की बेंचै बनवाकर व्यवस्थित तरीके से लगाकर उस सुकून को आनंद में तब्दील कर दिया है। बेंचे लगवाने के लिए प्रेरित करने वाले श्री द्वारकेश मित्र मंडल ने यह कार्य बखूबी निभाया है। यहां आने वाले लोगों को जब यह एहसास हुआ कि कुछ पल यहां बैठकर आनंद को महसूस किया जाए, उसके लिए बैठने की जगह की तलाश में लोग सीमेंट से बनी हुई। पुरानी नाममात्र की बेंचो पर बैठ जाते थे, उसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए श्री द्वारकेश मित्र मंडल के सदस्यों ने कई लोगों से आग्रह कर अपने परिवारजनों की याद में वहां बैठने के लिए बेंचे लगवाने के लिए प्रेरित किया और यह सिलसिला चल निकला।

आज करीब करीब पूरी पाल पर 100 आरामदायक लोहे की बेंचे स्थापित हो चुकी है। इसमें बापू मार्बल का विशेष अर्थ सहयोग रहा। इसी मित्र मंडल ने दो बड़े झूले भी लगवाए, जिन पर संगी सहेलियां झूलों का आनंद लेते हुए हमें नजर आ ही जाती है। कई वर्षों से बंद पड़े मगरमच्छ उद्यान पर आकर्षक फव्वारे को भी इन्होंने जीर्णोद्धार करके शुरू करवाकर उसमें चार चांद लगा दिए। कमलबुर्ज स्थित भैरव मंदिर का सौंदर्यीकरण और शेड का निर्माण भी इसी संस्था द्वारा कराया गया।

यहां आने वाले लोगों को घूमते हुए जब प्यास लगती थी, तो यहां पानी की व्यवस्था नहीं होने पर प्यासा ही रहना पड़ता था, तो श्री द्वारकेश मित्र मंडल के सदस्यों और कई समाजसेवियों ने वहां पर लोगों को मोटिवेशन करके पानी की व्यवस्था के लिए कैंपर की सुचारू रूप से इंतजाम कर दिया, जो 365 दिन और 24 घंटे रहता है। यह एक ऐसी जगह है, जहां आपको हर 50 मीटर पर ठंडे और मीठे पानी की माकूल व्यवस्था नजर आ ही आएगी।

इस उद्यान का कायाकल्प उस वक्त हुआ, जब यहां घूमने आने वाले लोगों में नगरपरिषद पूर्व सभापति आशा पालीवाल के पति और कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता स्व. प्रदीप जी पालीवाल को जब यह अहसास हुआ कि यहां आने वाले लोगों को अंधेरे के कारण बहुत परेशानी होती है, तो उन्होंने और सभी स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रयास से वहां पर नगरपरिषद द्वारा स्ट्रीट लाइट लगवाने का बहुत ही अच्छे कार्य को अंजाम दिया। अब वहां आने वाले लोगों को अंधेरे से निजात मिल चुकी थी, लेकिन कुछ बुजुर्ग बच्चे उस पाल की पथरीली सतह पर चोट लगने के कारण परेशान नजर आते थे, तो नगरपरिषद के नेतृत्व में पूरी पाल पर सीसी रोड बनवाने का एक बहुत ही अच्छा कार्य राजसमंद की जनता के लिए किया, जो वास्तव में काबिले तारीफ है। इस कार्य में राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी का भी उल्लेखनीय योगदान रहा।

जब यहां की रौनक में चार चांद लगने लगे, तो नगरपरिषद ने एक और कदम उठाते हुए यहां पर बच्चों के लिए झूले और कई मनोरंजन के साधन लगा दिए। एक्सरसाइज के लिए यहां पर एक छोटा जिम भी स्थापित कर दिया, जिससे लोगों के स्वास्थ्य के लिए काफी कुछ कमी को पूरा कर दिया। अदब की छतरी मित्र मंडल ने भी अपना पूर्ण सहयोग इसके विकास कार्य में दिया।

यहां का बहुत सारा हिस्सा जेके इंडस्ट्रीज ने गोद लेकर उसे खूबसूरत बना दिया, जिसमें उन्होंने गार्डन में अच्छी किस्म की घास लगवाई। अच्छे- अच्छे फूलों की बेले लगवाई। कई सुंदर और आकर्षक पेड़ों को यहां लगवा कर उसकी पूरी मेंटेनेंस को भी अपने जिम्मे लेकर उस जगह को खूबसूरत बना दिया, जिससे यहां की आभा ही कुछ निराली बन गई है। कई भाग हैं, जो छूट गए हैं, जिसको अभी अभी मॉर्निंग क्लब के सदस्यों ने एक प्रयास से 100 पेड़ लगाने की मुहिम को अंजाम दिया है, जिसकी देखरेख का जिम्मा भी इन्होंने ही उठाया है। मेरी नजर में यह प्रयास वास्तव में आने वाली पीढ़ी को एक नई राह की ओर अग्रसर जरूर करेगा। क्योंकि जो यह कार्य कर रहे हैं, वह वास्तव में प्रकृति और मानव के लिए एक अमूल्य उपहार ही है। आज जो भी संस्थाएं इरीगेशन पाल को सुंदर बनाने की मुहिम में अग्रसर रही है और अपने निरंतर प्रयास से उस पाल को नैसर्गिक सुंदरता की ओर अग्रसर करने की जो चाह उनमें पल रही है। मानो ऐसा लगता है कि अपने इकलौते बच्चे को बाप बहुत अच्छी परवरिश से पाल पोस कर बड़ा कर रहा हो, राजसमंद की ऐसी नेक दिल जनता को मैं हृदय से साधुवाद देना चाहूंगा कि इन्होंने अपने सबसे कीमती समय में से अपने तन, मन, धन और भाईचारे की मिसाल को कायम करते हुए यह कार्य किया है। मैं ऐसी राजसमंद की सभी स्वयंसेवी संस्थाएं और उन महापुरुषों को सलाम करता हूं, जिन्होंने इस पुनीत कार्य में अपना योगदान बहुत ही खूबसूरत तरीके से दिया है। आने वाले समय में राजसमंद की जनता आप को हर पल, हर समय, हर क्षण आपके इस कार्य के लिए हमेशा अपने दिल में जगह जरूर देगी। हम ऐसी सभी प्रकृति प्रेमी गुमनाम शख्सियतों को दिल से सलाम करते हैं।

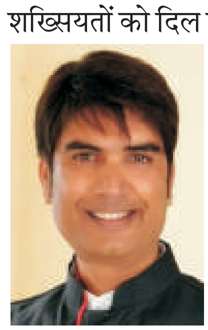

राहुल दीक्षित
लेखक काव्य गोष्ठी मंच
कांकरोली

रोड लाइट, घर- घर नल और पक्की सड़कों से स्मार्ट गांव बना कालिंजर

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद. पेयजल के स्थायी समाधान के लिए ट्यूबवैल खुदवाए, तो सुगमन आवागमन के लिए गांव, ढाणी व मजरे तक डामर व सीमेंट से पक्की सड़कों का निर्माण करवाया। गांव में सघन पौधरोपण कर पर्यावरण को संरक्षण प्रदान किया। सोलर प्लांट व रोड लाइटो से गांव-ढाणियां रोशन हो गई है। सरपंच मंजू गुर्जर व पूर्व सरपंच शंकरलाल गुर्जर के प्रयासों से दस वर्ष में हर गांव-ढाणी में पक्की सड़कें, ट्यूबवैल से पेयजल का स्थायी समाधान और रोड लाइटों से कालिंजर पंचायत स्मार्ट गांव के रूप में विकसित हुआ है। **सरपंच मंजू गुर्जर ने बताया कि कालिंजर पंचायत को मॉडल व स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित करने का उनका सपना है, जिसे साकार रूप दिया।**

1. ट्यूबवैल भीलवाड़ा भील बस्ती 3 लाख
2. ट्यूबवैल, टंकी, पाइप लाइन विस्तार कितावतों की भागल 5 लाख
3. ट्यूबवैल, टंकी, पाइप लाइन विस्तार मामादेव की भागल 6 लाख
4. ट्यूबवैल, टंकी, पाइप लाइन विस्तार बड़गुल्ला 8 लाख
5. ओपन कुआ निर्माण बड़गुल्ला 6 लाख
6. इंटरलोकिंग निर्माण बड़गुल्ला 10 लाख
7. ट्यूबवैल, टंकी व पाइप लाइन विस्तार धुणी की भागल 5 लाख
8. ट्यूबवैल, टंकी, पाइप लाइन विस्तार रेबारियों की ढाणी 4 लाख
9. ट्यूबवैल, टंकी, पाइप लाइन विस्तार सिरोही की भागल 5 लाख
10. मोटर-पाइप सुथारों की भागल 2.5 लाख
11. पाइप लाइन विस्तार कालिंजर 3 लाख
12. ट्यूबवैल, मोटर नोहरा 3 लाख
13. ट्यूबवैल, टंकी, पाइप लाइन विस्तार उदाजी की भागल 5 लाख
14. ट्यूबवैल मोटर रामावि कालिंजर 2 लाख
15. ट्यूबवैल, मोटर भील बस्ती 4 लाख
16. ट्यूबवैल, मोटर भीलों का खेत 3 लाख
17. ट्यूबवैल, मोटर उमरिया बस्ती 3 लाख
18. ट्यूबवैल, मोटर बलाई बस्ती मादरेचा का गुड़ा 3 लाख
19. ट्यूबवैल मोटर वाड़ा खेत मादरेचो का गुड़ा 3 लाख
20. ट्यूबवैल, मोटर विस्तार तलाई की भागल, कितावतों की भागल 3 लाख
21. मोटर, पाइप कलतिया भील बस्ती मामादेव की भागल में 6 लाख
22. मोटर, पाइप लाइन भील बस्ती 2.5 लाख
23. ट्यूबवैल मोटर रूपसिंह की दुकान के पास बल्लो का गुड़ा 2 लाख
24. पुलिया निर्माण बड़गुल्ला 14 लाख
25. सोलर प्लांट मामादेव की भागल 8 लाख
26. सोलर प्लांट कालिंजर 8 लाख
27. रोड लाइट कालिंजर 3 लाख
28. रोड लाइट बड़गुल्ला 1 लाख
29. मॉडल तालाब कालिंजर 14 लाख
30. मॉडल तालाब मादरेचो का गुड़ा 14 लाख
31. मॉडल तालाब बड़गुल्ला 14 लाख
32. पूरी पंचायत में 20 हैंडपंप खुदवाए

गांव की मुख्य सड़कें डामरीकृत, गलियों में भी सीसी रोड एवं इंटरलॉकिंग टाइल्स

कालिंजर पंचायत मुख्यालय से ठेठ ढाणी तक की प्रमुख सड़कों व गलियां डामरीकृत हो चुकी है, तो तंग रास्तों पर भी सीसी रोड या इंटरलॉकिंग टाइल्स बिछ चुकी है। हर समाज के लिए अलग अलग सामुदायिक भवन, बैठक के लिए चबुतरा निर्माण किया है, तो रोड लाइटें भी लगवाई गई है। इस तरह समूचे कालिंजर पंचायत अब विकास कार्यो से जगमगाने लग गई है। पंचायत के सभी ढाणियों में हर समाज के लिए अलग अलग अत्याधुनिक श्मशानघाट भी बनाए है, जिसको लेकर ग्रामीणों उत्साह का माहौल है।

प्रमुख सड़कों का ब्यौरा

1. सीसी रोड धुणी की भागल 3 लाख
2. सीसी रोड बड़गुल्ला 5 लाख
3. सीसी रोड पिछोरा की भागल 2.5 लाख
4. सीसी रोड लीलबत्ती पिछोरा 5 लाख
5. चबुतरा निर्माण सुथारों की भागल 1 लाख
6. सीसी रोड मादरेचों का गुड़ा 2.5 लाख
7. सीसी रोड मादरेचो का गुड़ा 2.3 लाख
8. सीसी रोड शंकरसिंह के घर से खीमसिंह के घर तक मादरेचा का गुड़ा 5 लाख
9. सीसी रोड मुख्य गांव कालिंजर 5 लाख
10. सीसी रोड गिरधारीलाल घर से खेतपाल बावजी मंदिर तक कालिंजर 2 लाख
11. दशामाता चबुतरा निर्माण भील बस्ती भीलों का खेत 1.5 लाख
12. राउप्रावि मादरेचो का गुडा में स्टेज का निर्माण करवाया 1.5 लाख
13. राउप्रावि मादरेचा का गुड़ा में दीवार व रास्ता निर्माण करवाया 3 लाख
14. सामुदायिक भवन राजपूत बस्ती मादरेचो का गुड़ा 3 लाख
15. डामरीकरण रोड उदाजी की भागल, मादरेचो का गुड़ा 50 लाख
16. परमारों की भागल से कालिंजर तक सड़क निर्माण 12 लाख
17. मामादेव की भागल तक सड़क का डामरीकरण करवाया 22 लाख
18. पिछोरा में गोमाजी की ढाणी तक डामर सड़क का निर्माण 50 लाख

कालिंजर पंचायत मुख्यालय व गांवों को जोड़ने के लिए निर्मित डामरीकृत सड़क एवं सीसी रोड का निर्माण।

कालिंजर पंचायत के सभी राजस्व व मजरे भी इस तरह इंटरलोकिंग टाइल्स के माध्यम से सड़कों से जुड़ गए हैं।

अत्याधुनिक तकनीक से बनाए सुविधायुक्त श्मशानघाट

हर गांव,ढाणी में अत्याधुनिक तकनीक से सुविधायुक्त श्मशानघाट बनाए गए हैं, जहां न सिर्फ सुगम तरीके से शवदाह हो रहा है, बल्कि लोगों के बैठने के लिए भी सुविधा उपलब्ध है। पिछोरा में राजपूत व भील बस्ती में 10 लाख, गुर्जर व सुथार समाज में 10 लाख, नाई, प्रजापत, सुथार समाज मादरेचा का गुड़ा में 2 लाख, धुणी की भागल में राजपूत समाज के लिए 2 लाख, भील बस्ती कितावतो की भागल में 2 लाख, राजपूत-रेबारी समाज कितावतों की भागल के लिए 4 लाख खर्च किए। इसी तरह बल्लो का गुड़ा में 10 लाख, राउमावि कालिंजर कक्षाकक्ष 18 लाख, उप स्वास्थ्य केंद्र मरम्मत व चारदीवारी 6 लाख, मुख्य रोड से पिछोरा नाड़ी तक नरेगा सड़क 30 लाख खर्च हुए। मुख्य रोड से तलाई का भीलवाड़ा तक नरेगा रोड 14 लाख, धुणी की भागल से श्मशानघाट तक रास्ता, साइड दीवार पर 14 लाख, मुख्य रोड से भंवरी की भागल तक रास्ता 14 लाख, नाड़ी निर्माण कालिंजर 14 लाख, बड़गुल्ला में महादेव मंदिर से अमजर का वाड़ा तक सीसी रोड 14 लाख खर्च हुए।

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

वह एक इंसान तो है

कॉलबेल की आवाज सुनते ही मैंने झट से दरवाजा खोला। भरी दुपहरी में। इतनी उमस भरी गर्मी में बाहर दरवाजे पर खड़ी सिन्हा भाभी ! मैंने उन्हें अंदर बुलाया।

सॉरी, तुमसे एक जरूरी काम आ पड़ा, इसलिए...।

अरे भाभी, हम लोग पड़ोसी हैं, फिर संकोच कैसा ! बताइए क्या काम है ? बीच में ही बात काटते ही मैं बोल पड़ी– रात में ससुराल से बहुत सारे रिश्तेदार मेरे घर आ रहे हैं। उन लोगों को कल वैष्णोदेवी जाना है। मात्र, एक दिन वो लोग यहां रुकेंगे। भाभी, प्लीज़... अपनी कामवाली को आज शाम मेरे घर भेज दीजिएगा। जितना पैसा बोलेगी, उसे दे दूंगी ?

क्या कहूं भाभी ! मेरी कामवाली बहुत नखरे दिखाती थी ? आने के साथ ही उसे कभी पेट में दर्द..., कभी चक्कर, तो कभी कुछ हजार बहाने ! मनमाना पगार दो, उस पर से इतने नखरे ! कामवाली न हुई, बड़े ओहदे वाली हो गई ! मुझसे ये सब बर्दाश्त नहीं हुआ, सो खड़ी– खड़ी मैंने उसे सुना दिया– जा पहले सेहत दुरुस्त कर, फिर काम करने आना ? भाभी, आपकी कामवाली बहुत अच्छी है। कभी ना नहीं करती है। सच में आप बहुत भाग्यशाली हैं। सारी बातें वो एक ही सांस में कहकर मेरा मुंह ताकने लगी।

हां, मेरी कामवाली वाकई अच्छी है, लेकिन इधर कुछ दिनों से उसके दाहिने हाथ की नसें खींच गई। न बर्तन धो पाती और न ही झाड़ू, पोछा। फिर आकर करती क्या है ? सिन्हा भाभी ने एक और गोला कसकर दागा।

मैं तिलमिला कर बोल पड़ी– बेचारी, कैसे करेगी ! परसों से ही उसके हाथ में तेज दर्द है। मुझसे देखा नहीं गया, सीधे डॉक्टर के पास ले गई। डॉक्टर ने दर्द की गोलियां साथ में एक तेल मालिश के लिए दिया और कहा– घबराने की बात नहीं है, जल्द ठीक हो जाएगा। पर, उसके घर में बूढ़े, विकलांग पिता के अलावा कोई नहीं है। इसलिए मैं उसे अपने पास बुला लेती हूं। हाथ में सही से मालिश हो जाती है और बचा खुचा घर का खाना भी उसे साथ लगा देती हूं, ताकि दोनों बाप– बेटी को भूखा नहीं सोना पड़े।

बेचारी ! इतने से ही गदगद हो जाती है। आज मुझसे वो भावुक होकर बोली– भगवान आपकी सुहाग को सलामत रखें, मुझ गरीब को मालिश करने में तनिक भी आपको घृणा नहीं आई ! लेकिन, भाभी आपने ये सही नहीं किया। उन छोटे लोगों का मन इसी से चढ़ बढ़ जाता है। अरे ! वो हमारी मां सांस थोड़े ही है। उसे पगार तो मिलती ही है। फिर ये सब नौटंकी ? सिन्हा भाभी झुंझलाकर तेज से बोली।

बात को संभालते हुए, मैं आहिस्ता से बोली– माना वो रिश्तेदार नहीं लगती, आखिर इंसान तो है ? बस दो दिन उसके हाथ में तेल लगा दिया और थोड़ा सा खाना दे दिया। क्या हुआ मुझे, कुछ भी तो नहीं ? जब ठीक हो जाएगी, तो उसी से सुख भी मिलेगा। झाड़ू– पोंछा, बर्तन जरूरत पड़ने पर कपड़े धोना और कभी मेहमान आए तो रसोई में भी मदद, सचमुच एक भरोसे का रिश्ता बन गया है। बचपन में अक्सर मैं सुना करती थी, जो हम दूसरों को देते हैं, ईश्वर दुगुनी करके वही हमें वापस देता है।

मेरी बातें अभी खत्म भी नहीं हुई थी कि सिन्हा भाभी नजरें झुकाकर, तेज कदमों से बाहर निकल गई। मैं स्तब्ध, अपलक उन्हें देखती रही। पर, मेरे अंदर मानवता और व्यवसायिकता का भयंकर घमासान युद्ध छिड़ चुका था।

मिन्नी मिश्रा
महेशनगर, अतना, पटना
मो. 83402-90574
mishraminni0@gmail.com

छूने को आकाश चला मैं

कभी भोर का साया बनकर
घोर निशा को तोड़ चला मैं
कभी रात का चंदा बनकर
संग चांदनी के मचला मैं

मेरा आंगन है नभ मंडल
जिसके आंगन बढ़ा पला मैं
वो ही मुझको बुला रहा है
छूने को आकाश चला मैं

सूरज की किरणों से खेला
अंधियारों को हंस कर झेला
तन्हाई में चला अकेला
मेले में गुजरा बन मेला

गरम हवा के तूफानों से
टकराया पर नहीं जला मैं
मंजिल दूर गगन है फिर भी
छूने को आकाश चला मैं

सच पर उतरा खरा खरा मैं
साजिशों से नहीं डरा मैं
थी हिम्मत मुझमे लड़ने की
घुट घुट करके नहीं मरा मैं

गैर नहीं अपनों के हाथों
हर राहों पर गया छला मैं
फिर भी सबको साथ में लेकर
छूने को आकाश चला मैं

कभी बहा सरिता की धारा
कभी झील का मिला किनारा
कभी आंख की अश्क बूँद तो
कभी समंदर का जल खारा

स्वाति बूंद बन सीप समाने
वाष्प बनकर पिघला मैं
मोती बनने की चाहत में
छूने को आकाश चला मैं

प्रमोद सनाढ्य
वरिष्ठ साहित्यकार
नाथद्वारा

गजल

सूखे पत्तों की सरसराहट
वीराने में दखल देती हैं।
देख मेरी धड़कने
तेरे दिल पर दस्तक देती हैं।
बड़े अजीब दस्तुर है
तेरे भी ऐ जिंदगी,
तु इश्क की उम्र में
किताबें थमा देती हैं।
मोहब्बत कितनी तुझसे अब क्या कहें,
तेरी याद इतवार को भी
कॉलेज बुला देती हैं।
डाल दिया कर
किसी फकीर की झोली में सिक्का
उसकी दुआ इन्सान को
फरिश्ता बना देती हैं।
थकान दिनभर की पलभर में
दूर हो जाती हैं,
मां जब तु हाथ से
खाना खिला देती हैं।

देव अजनबी
एमड़ी

मां

रात अंधेरी, चांद अकेला
तारे भी ना जाने कहां गए।
काली- काली अंधियारी में,
बेचारा चांद अकेला क्या करें।
मिल जाए आंचल मां का,
इसी उम्मीद में रातभर चले।
सन-सन चल रही जो हवा
उनसे शायद फिर चैन मिले।
कुछ काले, कुछ उजले बादल
से चांद आज बहुत घबराया है।
मां का सर पर हाथ नहीं अगर
कोई ऐरा गैरा भी उसे डराता है।
धरती हो या आसमां पर कोई,
सबके सर पर मां का हाथ रहे।
फिर कोई करे कितनी भी कोशिश
नहीं किसी की हिम्मत फिर कोई
भी उस पर घात करें।

नीरज त्यागी
गाजियाबाद (उत्तरप्रदेश)
मो. 09582488698

आज गुजरी हूं मैं उन राहो से

आज गुजरी हूं मैं उन राहों से,
देख अव्यवस्था सरकार की दिल मेरा टूट गया।
करोड़ों खर्च कर बनाया था जिन सड़कों को,
उनका खुलासा बारिश से आज हो गया।।

देश को बर्बाद कर वो, अपने घर को भर रहे हैं।
न्योता दे हादसों को,
किसी का बेटा, किसी का भाई रोज छीन रहे हैं।।

स्वार्थी है सरकार, अव्यवस्था उसे नजर नहीं आती है।
आएगी भी कैसे, रिश्वत की राशि जो उसके घर पहुंच जाती है।।

लग रही है तुझे हाय सबकी, एक दिन तू बहुत पछताएगा।
भटकेगा तू इधर- उधर, पर अपनों का सहारा ना पाएगा।।

क्योंकि उन हादसों में, तेरे अपने भी बेमौत मारे जाएंगे।
तब होगा तुझे एहसास, जब तेरे अपने खो जाएंगे।।

पर अफसोस, तब देर बहुत हो जाएगी।
तेरी ही बनाई सड़क पर, तेरी बेटी जब मारी जाएगी।।

बेटी का नाम सुनते ही, तेरी रूह कांप जाएगी।
लाखों रुपए लूटाएगा अस्पताल में, फिर भी वो न बच पाएगी।।

बचेगी भी वो कैसे, तुझे लाखों की बद्दुआ जो लग जाएगी।
अपनों को खोने की पीड़ा, शायद तुझे सही राह दिखाएगी।।

अनीति से कमाया धन, तुझे बहुत तकलीफ पहुंचाएगा ।
ऐशो आराम खरीद कर भी तू, बहुत अकेला हो जाएगा ।।

अब भी वक्त है संभल, देश के विकास में हाथ बंटा जा।
कर ले कुछ अच्छे कार्य जनहित के, इस देश को चमन बना जा।।

और इस तरह तू अपनी, खोई प्रतिष्ठा फिर पा जा।
वसुधैव कुटुंबकम की भावना रख, अपनी एक पहचान बना जा।।

वीणा वैष्णव
कांकरोली
9928640870

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101

जम्मू कश्मीर में धारा 370 हटने पर देश के साथ राजसमंद में भी जश्न

देश की आजादी के बाद जम्मू-कश्मीर की परिस्थितियों के कारण तात्कालीन सरकार ने धारा 370 व 35ए लगाई, जिसके कारण जम्मू- कश्मीर देश की मुख्य धारा से नहीं जुड़ पाया था। वहीं इस धारा फायदा उठाकर पाकिस्तान आए दिन आतंकवादी घटनाओं को अंजाम दे रहा था। इस आतंकवाद का दंश कश्मीर के साथ पूरे देश को भुगतना पड़ रहा था। पिछले 70 सालों में जितनी भी सरकारें आई, उन्होंने इस समस्या को देखते भी अनदेखा किया और दृढ़ इच्छाशक्ति के अभाव में समाधान नहीं हो पाया। अलगाववादी, हुर्रियत नेता इस धारा की आड़ में राजनीतिक रोटियां सेंक रहे थे। इस धारा के हटने के बाद जम्मू कश्मीर देश की मुख्यधारा में जुड़ेगा और नए उद्योग धंधे व रोजगार विकसित होंगे, जिसका फायदा वहां के निवासियों को मिलेगा। इस ऐतिहासिक फैसले पर राजसमंद के जनप्रतिनिधि व प्रबुद्धजनों ने जयवर्द्धन के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया इस तरह व्यक्त की।

पहली बार महसूस हुआ है कि जम्मू-कश्मीर और लद्दाख भी भारत के अनन्य अंग है। मैं पिछले 15 सालों में दो दफा कश्मीर गया हूं, पर वहां के भयग्रस्त माहौल में कश्मीर के खूबसूरती का लुत्फ़ कम हो गया था। पड़ौसी देश पाकिस्तान ने आतंकवाद फैलाकर कश्मीरी पंडितों को निर्वासित होने को मज़बूर कर दिया और अनुच्छेद 370 के चलते देश के नागरिक कश्मीर से दूर होते गए। कश्मीरी युवाओं की एक पूरी पीढ़ी को भारत के विरुद्ध बरगला दिया गया और वे भारत को अपने से अलग और दुश्मन समझने लगे। मोदी सरकार के इस साहसिक कदम से अब जम्मू कश्मीर और लद्दाख शेष भारत के साथ जुड़ जाएगा और सही मायने में कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश एक होगा। अब तक बेवजह उपेक्षित लद्दाख ही नहीं, अपितु जम्मू कश्मीर के शेष देश से जुड़ जाने से समग्र विकास होगा। सभी देशवासियों को बधाई।

नीलेश पालीवाल, एडवोकेट राजसमंद

मोदी सरकार के पहले 5 सालो में देश की जनता को यह अपेक्षा थी, जिसका विपक्ष भी जवाब मांगता रहा। आज वो संभव हुआ, मेरी व्यक्तिगत दृष्टि से देश को अन्तर्राष्ट्रीय और जम्मू कश्मीर को भारत में और वैभव प्राप्त होगा।

शंकर सचदेव, कांग्रेस कार्यकर्ता कांकरोली

धारा 370 हटाने पर कांग्रेस यदि साथ देती, तो यह कांग्रेस के लिए संजीवनी बन सकती थी। अगर वो इस मुद्दे पर तुष्टीकरण को त्याग के राष्ट्रहित में साथ देते। राष्ट्रवाद के इस मुद्दे पर कांग्रेस का साथ नहीं देने से आम कांग्रेसी कार्यकर्ताओं में असमंजस की स्थिति पैदा हो गई है। एक सच्चे कांग्रेसी कार्यकर्ता को डर सताने लगा है कि कहीं पार्टी का अस्तित्व ही खतरे में न पड़ जाए। इसकी जनमानस में चर्चा है।

नारायणलाल कुमावत, कांग्रेसी कार्यकर्ता भाटोली

सर्वप्रथम कश्मीर से धारा 370 हटाने पर मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी और उनकी सरकार का आभार प्रकट करता हूं। भारत देश में एक देश एक कानून होना जरूरी है। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, जहां पर निवास करने वाले कश्मीरी पंडितो का और सेना का आतंकी और समुदाय विशेष के अलगाववादियों ने जीना मुश्किल कर रखा था। उनको और भारतीय सेना पर पत्थरबाजी करने वालों को मोदी सरकार का करारा जवाब मिला है। इसके लिए हमेशा शिव सेना प्रमुख माननीय बाला साहेब ठाकरे कहते थे कि आतंकी पर कोई मुकदमा नहीं, सीधा शूट किया जाए।

हेमन्त गुर्जर,
जिला प्रमुख शिवसेना राजसमंद

धारा 370 हटने से श्यामा प्रसाद मुखर्जी को सच्ची श्रद्धांजलि एवं 70 सालो से जनसंघ व बीजेपी कार्यकर्ताओं का परिश्रम का फल है। मोदी जी व अमित शाह की दृढ इच्छा शक्ति का ही ही परिणाम है। अब घाटी का संपूर्ण विकास होगा। क्योंकि धारा 370 घाटी के गरीबो दलितों के विरोधी धारा थी। कश्मीरियों व भारतीयों के बीच जो दीवार थी, उसे खत्म कर दिया। कांग्रेस ने धारा 370 का विरोध कर अपने अस्तित्व के अंत की शुरुआत कर दी है। यह जम्मू कश्मीर के लोगों के लिए काफी अच्छा कदम है।

सम्पतनाथ चौहान, पंचायत समिति सदस्य राजसमंद

प्रत्येक भारतीय को इस पर गर्व होना चाहिए कि अनुच्छेद 370 निरस्त कर दिया गया। भारत एक राष्ट्र है। इसकी अखंडता गैर परक्राम्य है। राजनीतिक साहस की कमी के कारण यह कलंक भारत के माथे पर 70 साल तक रहा। हम कश्मीरियों को शेष भारत के साथ एकीकृत करना पसंद करते हैं, जैसा कि बिहारी तमिल मारवाड़ी बंगालियों के पास है। भारत माता के लाल नरेंद्र मोदी जी और अमित शाह जी को बहुत बहुत धन्यवाद।

कुलदीप टेलर, सामाजिक कार्यकर्ता राजसमंद

मोदी सरकार द्वारा धारा 370 खत्म कर जम्मू कश्मीर के पुनर्गठन की जो प्रक्रिया आरंभ की गई, वह एक देश, एक संविधान, एक निशान की राह में मील का पत्थर साबित होगी। साथ ही इससे कश्मीर सीमा पर एवं जम्मू कश्मीर में अपनी जान न्योछावर करने वाले हमारे बहादुर जवानों को सच्ची श्रद्धांजलि हैं।

अनिल खण्डेलवाल,
फाइनेंस व्यवसायी कांकरोली

धारा 370 हटाने के बाद अब जम्मू कश्मीर को नई आजादी मिली है। अब देश की मुख्यधारा से जुड़ा है। कश्मीर और कश्मीरवासियों के चेहरों पर खुशी की झलक दिखी है और यह खुशी तब और बढ़ जाएगी, जब वहां पर उद्योग धंधे विकसित होंगे, वहां के युवाओं को रोजगार मिलेगा और आतंकवाद से मुक्ति मिलेगी। पाकिस्तान अब आतंकवाद के नाम पर वहां की जनता को गुमराह नहीं कर पाएगा। यह एक ऐतिहासिक फैसला है। अपने अचानक फैसले से दुनिया को चौंकाने वाले नरेंद्र मोदी ने यह कर दिखाया।

सुरेश पालीवाल,
सभापति नगरपरिषद राजसमंद

आजादी के बाद प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू ने कश्मीर मसले पर जो गलती कि उसे मोदी सरकार ने अपने दम पर सुधार दिया। अब तक की सरकारों ने इस धारा 370 को छेड़ने का कभी प्रयास नहीं किया था । अब जम्मू कश्मीर के साथ देश में भी आतंकवाद का समूल नष्ट होगा। पाकिस्तान अब कश्मीर में हस्तक्षेप नहीं कर सकेगा। वहां की जनता को भयमुक्त होकर जीने का अधिकार प्राप्त होगा, यह अब तक का सबसे ऐतिहासिक फैसला है।

भरत पालीवाल,
उप प्रधान पंचायत समिति राजसमन्द

जब 1947 में भारत आजाद हुआ। उस वक्त कश्मीर एक अलग राज्य था, जहां के राजा हरिसिंह जी ने कबाली लोगों के आक्रमण के कारण भारत में मिलने का प्रस्ताव रखा, जिसे भारत सरकार ने उस वक्त स्वीकार किया, मगर उसमें कुछ शर्ते रखी गई, जिन शर्तों के आधार पर कश्मीर का भारत में विलय हुआ। वर्तमान सरकार का यह मानना है कि उन शर्तों से भारत की आंतरिक सुरक्षा को खतरा है। अत: उन्होंने यह शर्ते जिन्हें हम धारा 370 और 35ए कहते हैं, को खत्म कर दिया। अब इसका परिणाम आने वाले कुछ सालों में जिस तरह शर्ते लगने पर दिखाई दिया। वैसे ही यह धारा खत्म होने के अच्छे या बुरे परिणाम आने वाले दिनों में दिखाई देंगे।

अफजल खां अफजल,
वरिष्ठ साहित्यकार राजसमंद

धारा 370 को खत्म करके मोदी सरकार ने एक एतिहासिक काम किया है। यह कदम एक देश, एक झण्डा, एक विधान के सिद्धान्त पर किया। राष्ट्र हित में लिया गया है, जो मोदी जी की ईच्छा शक्ति को दर्शाता है। इस सरकार की जितनी प्रशंसा की जाय कम है।

सुन्दर लाल पालीवाल, धोइंदा, राजसमंद

पार्टी से ऊपर उठकर राष्ट्रवाद के धारा 370 के मुद्दे पर कांग्रेस पार्टी को भी देश हित में साथ आना चाहिए था। जिस आतंकवाद के दंश को कश्मीर के साथ पूरा देश भुगत रहा है। इस मुद्दे पर भी अगर कांग्रेस निजी हित के कारण साथ नहीं देती है, तो इस तरह की तुच्छ राजनीति व्यर्थ है।

इन्दर जोशी, कांग्रेस कार्यकर्ता राजसमंद

कमर मेवाड़ी को डॉ. विद्यासागर शर्मा सृजन सम्मान

राजसमंद. राजस्थान साहित्यकार परिषद कांकरोली की ओर से होटल स्वागत कांकरोली में आयोजित समारोह में कवि, कथाकार, उपन्यासकार एवं साहित्यिक पत्रिका सम्बोधन के पूर्व सम्पादक कमर मेवाड़ी के 80 वर्ष पूर्ण होने पर डॉ. विद्यासागर शर्मा सृजन सम्मान से नवाजा गया। सम्मान में शॉल ओढ़ाकर, श्रीफल देकर, प्रशस्ति पत्र के साथ 11 हजार रुपए नकद प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि उज्जैन से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका के सम्पादक श्रीराम दवे व विशिष्ट अतिथि कथाकार व श्रीगंगानगर से सृजन कुंज पत्रिका के सम्पादक डॉ. कृष्णकुमार आशु, डॉ. मंगत बादल, डॉ. अरुण शहैरिया ताइर, प्रतापसिंह सोढ़ी, इन्दौर थे। अध्यक्षता आयुर्वेदाचार्य डॉ. वेदप्रकाश शर्मा ने की।

डिजिटल बेटी भावना का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान

देवगढ़. दिल्ली में आयोजित सीएससी दिवस के स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह में देवगढ़ की महिला वीएलई डिजिटल बेटी भावना पालीवाल का राष्ट्रीय स्तर सम्मान किया गया। समारोह में संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी डॉ रवि शंकर प्रसाद, विधि एवं न्याय मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस व इस्पात मंत्री संजय शामराव धोत्रे, सीएससी सीईओ दिनेश त्यागी, सूचना एवं प्रौद्योगिकी अजय साहनी आदि थे। विलेज लेवल इंट्रप्रेन्योयर भावना पालीवाल मंच पर सीएससी के मार्गदर्शिका का विमोचन किया। दिल्ली के श्रीरी फोर्ट आडोटोरियम में आयोजित इस समारोह में देश के सभी राज्यों से 2000 महिला वीएलई ने भाग लिया।

कांग्रेस वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रदीप पालीवाल का निधन

राजसमंद. राजसमंद की राजनीति के अजातशत्रु रहे प्रदीप पालीवाल का 22 जुलाई 2019 को निधन हो गया। वे करीब दो से ढाई माह तक बीमार थे। हंसमुख स्वभाव के कारण जनता के चहेते रहे। वे कांग्रेस पार्टी में वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष थे, जबकि जिला क्रिकेट एसोसिएशन में भी लंबे समय तक जिलाध्यक्ष रहे। खेलकूद प्रतियोगिताओं में उनकी खासी रूचि थी, जिसके चलते उनकी राजसमंद से क्रिकेट, कबड्डी, तैराकी आदि खेलों के लिए विशेष टीमें तैयार कर आगे भिजवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। उल्लेखनीय है कि इनके बड़े भाई परमानंद पालीवाल उर्फ पम्मु उस्ताद राजसमंद के दबंग नगरपालिका अध्यक्ष थे, वहीं उनकी पत्नी आशा पालीवाल भी नगरपरिषद में सभापति रहीं। प्रदीप पालीवाल के निर्देशन में राजसमंद में कई ऐतिहासिक कार्य हुए। उनके मधुर व्यवहार के कारण राजसमंद की जनता के दिलों में वे सदैव बने रहेंगे। **जयवर्द्धन परिवार** भी उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

बैग-जूते पाकर बच्चों के खुशी से खिल उठे चेहरे

राजसमंद. राजनगर का गुड़ा के राप्राबि में विहिप सामाजिक समरसता अभियान के तहत भामाशाह की मदद से बच्चों को बैग और जूते उपलब्ध करवाए गए। भामाशाह किन्नर समाज प्रमुख पारसमणी ने कहा कि बच्चे ही समाज का भविष्य है। इसलिए माता पिता को चाहिए कि वे बच्चों को स्कूल जाने से न रोकें। अध्यक्षता जिला सामाजिक समरसता अभियान प्रमुख भगवती लाल पालीवाल ने की। समाजसेवी सत्तू लौहार ने भी शैक्षिक उत्थान पर उद्बोधन दिया। जरूरतमंद छात्रों को स्कूली बैग व जूते वितरित किए गए। इस दौरान प्रधानाघ्यापिका रंजू नागौरी, अभिभावक समिति अध्यक्ष लहरीलाल गाडरिया थे।

बाधक ज्ञान का अहंकार

एक फकीर था, अगस्तीन। वह तीस वर्षों से ज्ञान इकट्ठा कर रहा था। जितने शास्त्र उपलब्ध थे, उसने पढ़ डाले थे। उसने कंठस्थ कर लिए थे। वह सब जान लिया था जो जाना जा सकता था। लेकिन परमात्मा की कोई खबर न मिली थी। फिर वह घबराया। अब वह चिंतित और दुखी हो गया। वह तपश्चर्या में लग गया। उसने उपवास किए, फिर वह भूखा रहा और धूप आतप सहे। शरीर को उसने सुखा डाला। लेकिन कोई परमात्मा की सुगंध न मिली। तब एक सुबह वह निराश और उदास होकर आत्महत्या करने समुद्र के किनारे चला गया। सुबह थी और अभी सूरज निकलने को था।

निर्जन तट था सागर का, वहां कोई भी न था। तब अगस्तीन वहां पहुंचा और उसने जाकर आकाश की तरफ हाथ जोड़े और कहा– हे परमात्मा, यह अंतिम मेरा निवेदन है, या तो तू मुझे मिल और या फिर मैं डूब कर आत्महत्या किए लेता हूं। यह अंतिम दांव है मेरा। अहंकारी हमेशा ही दांव लगाते हैं। अहंकार से बड़ा कोई जुआ नहीं है। अहंकार ही सबसे बड़ा दांव है। कोई आदमी अपनी जिंदगी लगा देता है धन कमाने को। कोई आदमी अपनी जिंदगी लगा देता है परमात्मा पाने को। लेकिन दोनों दांव अहंकार के हैं। एक को हम संसारी कहते हैं, दूसरे को हम सन्यासी कहते हैं। लेकिन दांव अहंकार का है कि मैं पाकर रहूंगा। उसने उस सुबह जाकर कहा कि या तो मुझे मिलो, या फिर मैं डूब कर आत्महत्या कर लेता हूं। यह मेरी आखिरी प्रार्थना है। वह यह कह ही रहा था कि सुबह सूरज निकलने लगा, उसने चारों तरफ देखा कि कोई देख तो नहीं रहा है। निर्जन तट था। लेकिन एक पत्थर के पास एक छोटा सा बच्चा बैठा रो रहा था। अगस्तीन बहुत हैरान हुआ। इतनी सुबह इस छोटे से बच्चे को यहां आने की क्या जरूरत पड़ गई? अकेला, कोई साथ नहीं। किसलिए रोता होगा? वह उस बच्चे के पास पहुंचा और उसने पूछा कि मेरे बेटे, तुम किसलिए रो रहे हो? क्या चाहते हो? इतनी सुबह तुम कैसे आ गए? तुम्हारे मां-बाप कहां हैं? वह बच्चा रोता ही रहा, उसकी आंख से आंसू टपकते रहे। उसने कहा– मत पूछिए मेरी तकलीफ को! अगस्तीन ने उसके आंसू पोंछे और कहा– मुझे बताओ, शायद मैं तुम्हारा कुछ साथ दे सकूं। उस बच्चे ने अपने हाथ में एक प्याली ले रखी थी और अगस्तीन को कहा कि यह प्याली है, मैं इसमें समुद्र को भरना चाहता हूं, लेकिन समुद्र इसमें भरता नहीं, तो मैं घबरा गया हूं। मैंने बहुत कोशिश कर ली और आज मैं तय करके आया हूं कि या तो समुद्र को भर कर घर लौटूंगा या फिर नहीं लौटूंगा। अगस्तीन के सामने जैसे बिजली कौंध गई। जैसे अंधेरे घर में कोई दीया जल गया। वह खड़ा हो गया अवाक।

फिर वह नाचने लगा। वह बच्चा पूछने लगा– आप नाचते क्यों हैं? क्या हो गया आपको? अगस्तीन ने कहा कि मेरे बेटे, मैंने समझा कि तू ही बालक है, अब मुझे पता चला, मैं भी एक बच्चा हूं। तेरी बात मुझे मूढ़तापूर्ण मालूम पड़ती है कि तू प्याली में सागर को भरने चला आया। लेकिन यह तो कभी हो भी सकता है कि सागर प्याली में भर जाए, क्योंकि प्याली भी सीमित है और सागर भी सीमित है। लेकिन मैं तो अपनी सीमित खोपड़ी में उसको भरने चला हूं, जो असीम है, वह कैसे भर सकेगा? मेरे तीस साल व्यर्थ गए और मुझे पता भी नहीं था कि एक बच्चे से यह संदेश मिलेगा कि मेरा सारा जीवन व्यर्थ गया। मैं भी इसी तरह के पागलपन में पड़ा था, लेकिन उसी क्षण जैसे उसकी जिंदगी और से और हो गई। वह नाचता हुआ वापस लौट गया। उसके आश्रम के लोगों ने उसे नाचते हुए देखा, तो सोचा कि शायद उसने पा लिया परमात्मा का ज्ञान। शायद वह सत्य को जानकर लौट रहा है। क्योंकि उसकी आंखों में कभी खुशी नहीं देखी गई थी। उसके होंठों पर कभी मुस्कुराहट नहीं देखी गई थी। उसके पैर भी नाच सकते हैं, इसकी किसी को कल्पना न थी। लोगों ने भीड़ लगा ली और उन्होंने कहा– अगस्तीन, क्या तुमने उसे पा लिया, जिसे तुम पाना चाहते थे? क्या तुमने वह जान लिया, जिसको जानने के लिए तुम दीवाने थे? क्या मिल गई वह बात? क्या पा लिया वह ज्ञान?

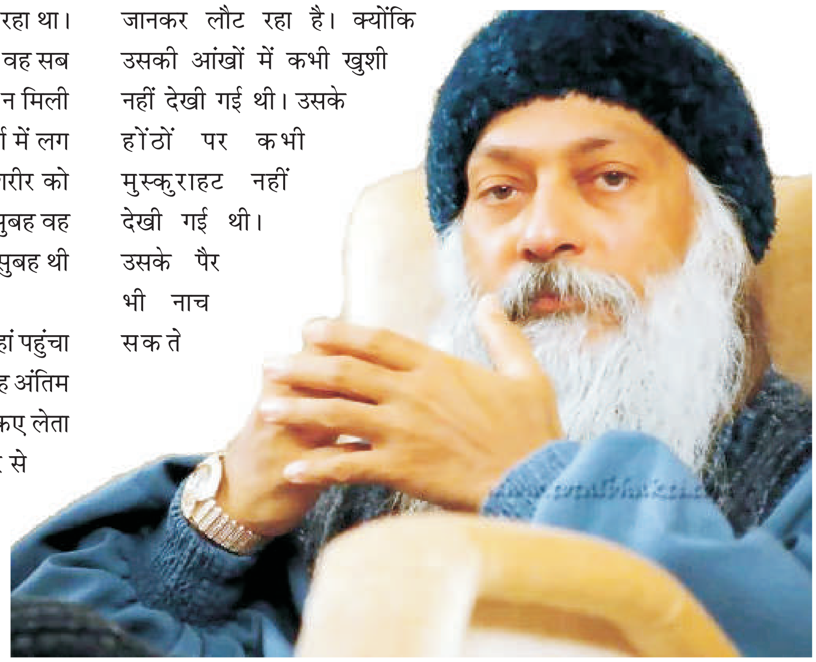

अगस्तीन ने कहा कि नहीं, जो पाने चला था वही खो गया। जो खोजने निकला था वही मिट गया और मैं तुमसे कहता हूं कि जिस क्षण मैंने पाने का खयाल छोड़ दिया और जिस क्षण मैंने जानने का खयाल छोड़ दिया, उसी दिन मैंने पाया कि उसे तो हमेशा पाया हुआ है। वह तो हमेशा जाना ही हुआ है, लेकिन जानने की कोशिश हमारी इतनी तीव्र थी कि हम उस कोशिश में ही उलझ गए और जो निरंतर साथ, पास मौजूद था, सब तरफ मौजूद था, वह दिखाई नहीं पड़ता। मनुष्य ईश्वर को नहीं जान सकता, लेकिन ईश्वर में मिट सकता है और उस मिट जाने से, जो उपलब्ध होता है, वह ज्ञान है, लेकिन वह ज्ञान पंडित का ज्ञान नहीं है। उस मिट जाने से जो जाना जाता है, वह अनुभव है। लेकिन वह अनुभव शब्दों से सीखा हुआ अनुभव नहीं है। बूंद खो जाती है सागर में और सागर हो जाती है। जान लेती है सागर को। लेकिन बूंद अगर चाहती हो कि सागर मुझमें आ जाए, बूंद अगर चाहती हो कि सागर को मैं अपने में भर लूं, तो असंभव है। लेकिन बूंद सागर में गिर सकती है और सागर हो सकती है और जब बूंद सागर में गिर कर सागर हो जाती है, तो पता लगाना कठिन है कि बूंद सागर में मिल गई कि सागर बूंद में मिल गया। वे दोनों एक ही हो जाते हैं। मनुष्य जान नहीं सकता, लेकिन हो सकता है। मनुष्य पा नहीं सकता, लेकिन हो सकता है। मनुष्य परमात्मा हो सकता है और वह जो होना है, वह जो हो जाना है, वही जानना है। लेकिन वह जानना शास्त्रों से नहीं मिलता, शब्दों से नहीं मिलता, सिद्धांतों से नहीं मिलता। सिद्धांत और शास्त्र तो एक झूठा ज्ञान देते हैं आदमी को। एक सब्स्टीट्यूट नॉलेज देते हैं। एक झूठा ज्ञान देते हैं, जिससे भ्रम पैदा होता है कि हमने जान लिया और हम बिना जाने रह जाते हैं।

–ओशो

हर तरफ पसरा है नौटंकीबाजों का तिलस्म

समाजसेवा, परोपकार और मानवीय सरोकारों को लेकर खूब सारे धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, व्यवसायिक और जाने कितने प्रकार के संगठन चल रहे हैं और ढेरों संस्थाएं हर क्षेत्र में काम कर रही हैं। इसी प्रकार अलग- अलग प्रजातियों और कर्मधाराओं से जुड़े व्यक्तियों के समूह भी हैं, जो किसी न किसी से जुड़े हुए हैं। कोई प्रत्यक्ष जुड़ा हुआ है, तो कोई अप्रत्यक्ष।

आम तौर पर सभी अपने उद्देश्यों को पावन, निष्काम, नि:स्वार्थ और सेवाव्रती बताते हैं, लेकिन सबके पीछे कुछ न कुछ निहित स्वार्थ की भावना सभी में समाहित होती ही है। प्रचार पाने से लेकर अर्थ संग्रह, आपराधिक कुकर्मों को छिपाने के लिए सुरक्षा कवच, बिजनैस के लिए क्लाइंट और ग्राहक तलाशी, अपने आपको आम से खास के रूप में दिखाने के खरे- खोटे धंधों, बड़े लोगों में बैठने, बड़े कहे जाने वालों के साथ घूमने और फिरने का शौक, अपनी आत्महीनता को ढंकने के लिए समूहों की सहायता या बैसाखियां पाने, औरों पर धमक दिखाने के लिए अपनी फौज साथ रखने और सभी प्रकार की जायज- नाजायज इच्छाओं और मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए आजकल इंसान तरह- तरह के स्वांग रचने लगा है।

आदमी अन्दर से कुछ और होता है और बाहर से कुछ और दिखता है। असल में आदमी अब आदमी रहा ही नहीं, अपने आप में वो बिजनैस हो गया है, जिसकी थाह कोई नहीं पा सकता। जो थाह पाने की कोशिश करता है, वही उलझ कर रह जाता है अथवा कहीं न कहीं किसी न किसी बहाने उलझा दिया जाता है।

चारों ओर वही सब कुछ हो रहा है, जो कलियुगी माया- मोह की देन है। आज के जमाने में वही चल निकलता है, जो औरों में आकर्षण जगा सकता है, उल्लू बना सकता है और दूसरों को अंधेरे में रख कर अपने उल्लू सीधे कर सकता है।

बाहर से दिखने में हर तरफ आदर्श और श्रेष्ठतम छवि प्रस्तुत की जाती है, लेकिन अंदरखाने कुछ और ही पकता है और वह भी ऐसा कि जिसकी गंध से भी घिन आए। बड़े- बड़े लोग होते कुछ और हैं, दिखते कुछ और। जिन लोगों को हम अर्से से ईमानदार, सेवाभावी और संस्कारित मानते रहते हैं। एक समय ऐसा आता है कि जब हमारे सारे आस्थावादी भ्रम टूट कर बिखर जाते हैं और अपने आपकी मूर्खता पर रोना आता है।

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

समूहों और संस्थाओं के नाम से अपनी- अपनी दुकानें और कियोस्क चला रहे लोग हर कहीं दोहरी- तिहरी जिन्दगी जी रहे हैं। लगता है कि सारे के सारे ये लोग सर्कल, चौराहों और तिराहों की मानिन्द ही होकर रह गए हैं, जहां हर तरफ वे अपना अधिकार चाहते हैं, लेकिन कुछ कर नहीं पाते। इनकी हालत ऐसी हो जाती है कि जाएं तो जाएं कहां।

असल में वे हैं कुछ और तथा दिखते और दिखाते कुछ और ही हैं। अपने- अपने बाड़ों के बारे में कोई कितना ही कुछ दंभ भरे, उसका असली आईना उससे जुड़ी इकाई है, जिनसे मिलकर वह समूह बनता है।

किसी भी संस्था, समुदाय या समूह के स्वभाव और चरित्र की पड़ताल करनी हो तो इनमें शामिल लोगों की जिन्दगी, चाल- चलन, उनके स्वभाव, हाव- भाव और जीवन लक्ष्यों के बारे में एक बार परख कर लें, अपने आप पूरे कुनबे के बारे में ज्ञान हो जाएगा।

चावल किसी भी किस्म के पकाए गए हों, एक दाना भर ही यह देखने के लिए काफी है कि चावल पके या नहीं। सभी प्रकार के समूहों, संस्थाओं और बाड़ों में शामिल कुछ लोगों की व्यक्तिगत जिन्दगी, कार्यशैली और जीवन व्यवहार को देखकर आसानी से यह अन्दाज लगाया जा सकता है कि पूरा कुनबा कैसा है।

इसलिए पूरी हाण्डी को हिला- हिलाकर या चम्मच डालकर नमूना लेने की बजाय किसी एक दाने को ही परख लेने भर से सारा माजरा जान पड़ता है। आजकल खूब सारे लोग और संस्थाएं आदर्श की बातें करते हैं, धर्म, अध्यात्म, समाजसेवा, परोपकार, ईश्वर दर्शन से लेकर दुनिया जहान तक की सारी व्यामोही व्यवस्थाओं का दिग्दर्शन कराने के सब्ज बाग दिखाते हैं।

इन सभी को अच्छी तरह जानने के लिए विज्ञापनों और दूसरे आकर्षणों के मोह में न फंसें बल्कि इनमें शामिल लोगों की जिन्दगी में थोड़े समय के लिए झांक लें, अपने आप सब कुछ सामने होगा। खूब सारे लोगों की कलई भी खुल जाएगी और इनके आसुरी- धंधों की असलियत से भी साक्षात हो ही जाएगा।

बच के रहियो सभी जगह दोहरे- तिहरे चरित्र वाले लोगों की भरमार है। कोई गुरु के नाम पर महानता का झुनझुना दिखा रहा है, कोई आश्रमों के नाम पर डमरू बजा रहा है। खूब सारे तालियां बजा- बजा कर नाच- गान कर रहे हैं और बहुतेरे ऐसे भी हैं जो अंधे मोह में धंसे हुए अपने- अपने हमाम में पूरी बेशर्मी के साथ नंगे होते जा रहे हैं।

कोई लच्छेदार भाषणों से भरमा रहा है, कोई वादों और आश्वासनों के कृत्रिम बादलों की बारिश करने में मग्न है और खूब सारे हैं, जो तरह- तरह के तमाशों के सहारे अपनी खोटी चवन्नियां चला रहे हैं। कोई डंडे चला रहा है, कोई झंडों के सहारे उछलकूद कर रहा है। सबने अपने- अपने कबीलों को इतना अधिक प्रशिक्षित कर रखा है कि इनके आगे सर्कस और स्वांग भी कहीं न ठहरें।

फिर कलाकार ऐसे कि दुनिया की सारी कलाओं को मात खिला दें। चौंसठ कलाओं और चौरासी आसनों से भी बढ़कर हुनर है इनके पास। मुखौटों का पूरा का पूरा जंगल उगा दिया करते हैं ये लोग, जब कभी मौका आता है। और लोग कठपुतलियों की तरह नाच- गान करते हुए इनके साथ रहकर हां जी, हां जी करते रहते हैं।

स्वांग इतना कि समाज जीवन के हर क्षेत्र में लगता है कि जैसे चारों तरफ बहुरुपियों और मायावी असुरों की कोई वैश्विक प्रतिस्पर्धा ही हो रही हो। खानसामाओं और बावर्चियों की स्पर्धा में गंध- सुगंध के गुबार उठ रहे हों और जनजीवन नर्तन करने और देखने में रमा हुआ हो। ऐसे में किस पर भरोसा करें और कौन भरोसे लायक रह गया हैए यह समझ पाना वर्तमान युग की सबसे बड़ी पहेली बना हुआ है।

डॉ. दीपक आचार्य
वरिष्ठ साहित्यकार बांसवाड़ा

टेंशन के कपड़े लेकर हो जाइए 'नो टेंशन'

विशेष ऑफर : 1200 की ब्रांडेंड जीन्स सिर्फ 499 रुपए में

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद. लोकल की कीमत में टेंशन ब्रांड के पेन्ट- जीन्स व शर्ट- टीशर्ट खरीद कर आमजन को टेंशन मुक्त करने के लिए राजसमंद के सौ फीट रोड पर जिला कलक्ट्री के सामने टेंशन का एक्सक्लूसिव शॉ रूम खुल गया है। शोरूम पर होलसेल रेट में कपड़े बिक रहा है। कंपनी द्वारा विशेष ऑफर जारी किया है, जिसके तहत करीब 1200 से 1500 रुपए की ब्रांडेंड जीन्स सिर्फ 499 रुपए में मिल रही है, जबकि 700 से 1000 रुपए का ब्रांडेंड शर्ट सिर्फ 299 रुपए में बिक रहा है।

टेंशन कंपनी के प्रबंध संचालक दुर्गेशसिंह भाटी ने बताया कि उच्च गुणवत्ता के कपड़ों है, जिनकी सिलाई भी उच्च श्रेणी के धागो से की गई है। न कपड़े फटने का झंझट है और न ही उसका रंग उतरने की टेंशन। ब्रांडेंड कपड़ों की गुणवत्ता को लेकर गारंटी है, जिसमें किसी भी तरह की शिकायत आने पर एक्सक्लूसिव शोरूम में सम्पर्क कर सकते हैं।

युवा जब्जे ने समझी बाजार की नब्ज, टेंशन ब्रांड को मिली पहचान

टेंशन ब्रांड के संस्थापक दुर्गेशसिंह भाटी व भूपेन्द्रसिंह भाटी है। वे मूलतः आमेट के बाणिया खेड़ा (राछेटी) के है, जिन्होंने करीब 7 वर्ष तक सूरत में रेडिमेट कपड़ा शोरूम में नौकरी करते हुए कपड़ों की गुणवत्ता परखी। फिर आधुनिक युवा की सोच व नजरिये के आधार पर टेंशन ब्रांड की वर्ष 2012 में नींव रखी, जिसके कपड़े देशभर में पसंद किए जा रहे हैं। युवा उद्यमी दुर्गेश व भूपेन्द्र ने शर्ट- जीन्स के अलावा युवाओं की पसंद के आधार पर विभिन्न तरह के कपड़े जारी किए हैं।

8 वर्ष में देशभर का चहेता टेंशन ब्रांड

टेंशन ब्रांड के शर्ट, टीशर्ट, पेन्ट व जीन्स की उच्च गुणवत्ता व न्यूनतम दर के चलते पूरे देशभर में प्रसिद्ध है। राजसमंद, उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा के साथ ही पूरे राजस्थान के अलावा दिल्ली, मुंबई, गुजरात, चैन्नई, केरला के साथ देश के विभिन्नों में टेंशन ब्रांड के कपड़ों की आपूर्ति हो रही है।

यहां एक्सक्लूसिव शोरूम

राजसमंद में 100 फीट रोड पर जिला कलक्ट्री के सामने टेंशन टावर में एक्सक्लूसिव शोरूम है। इसी तरह कुंवारिया, गौमती चौराहा, गंगापुर, फतहनगर, मावली, वल्लभनगर, भीण्डर व उदयपुर के बोहरा गणेशजी मंदिर के पास भी टेंशन का एक्सक्लूसिव शोरूम है।

मैं घडी के मानिन्द

मैं घडी के मानिन्द
चौबीस घंटे चलती
रुकती न सांस लेती
हर पल चलती फिरती
मैं घड़ी के मानिंद... ।

सुबह को उठकर
आंखें मलती अल्साती
मन कहता थोड़ा
और सो ले मगर
बच्चों के स्कूल की
घंटी कानों में बजती
मैं घड़ी के मानिंद... ।

झटका दे आलस से
लड़कर मुंह पर पानी
के छींटे दे मारती
शरीर को कर्तव्य से
परिचित कराती
मैं घड़ी के मानिंद... ।

किसी को मेरी फिक्र
नहीं मैं फिक्र से सबकी
फिक्र रख खुद को
मजबूत और मजबूत
कर घर के कामों में
जोगन सी जुट जाती
मैं घड़ी के मानिंद... ।

सूई सी बन घड़ी की
भांति खटर- पटर
करती दिन भर
शाम को इतना
थक जाती
जाते विस्तर पर
कल क्या बनाऊ ?
यह योजना बनाती
मैं घड़ी के मानिंद... ।

रात को बीच बीच में
कहीं दिन न फैल जाए
बार- बार जागती
मैं घड़ी के मानिंद... ।

राशि सिंह
मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश)

आओ कुछ अच्छे सपने बोते हैं

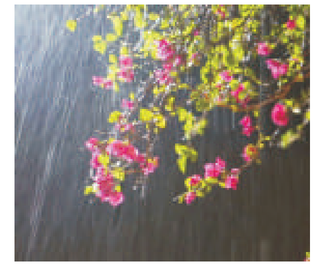

धरती को राहत दी जिसने
उस बादल का शुक्राना करते हैं
आओ कुछ अच्छे सपने बोते हैं
कुछ खुशियां साझा करते हैं।

ये बारिश गीत सिखाती है,
ये बारिश प्रीत बढ़ाती है,
आओ हम हाथ बढ़ाते हैं,
कुछ अच्छे सपने बोते हैं,
कुछ खुशियां साझा करते हैं।

धरती के सीने से देखो,
वो नन्हीं कोंपल फूटी है,
ये भी उम्मीद जगाती है,
कुछ आशाएं हम बोते हैं,
कुछ खुशियां साझा करते हैं।

बारिश की ये नन्हीं बूंदें,
अम्बर धरा को मिलाती हैं,
दूर कोई कितना भी रहे
फिर भी है प्रीत बताती हैं,

आओ स्नेह के सम्बल से,
हम भी कुछ स्वप्न संजोते हैं
कुछ अच्छे सपने बोते हैं
कुछ खुशियां साझा करते हैं।

बीना चित्तौड़ा
उद्घोषिका
आकाशवाणी उदयपुर

An ISO -9001:2015
M. 9829445469, 9929495228
शाईन कम्प्यूटर्स
RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)
C.F.A (Tally)
पूर्ण व्यवसायिक कोर्स
GST/Tally ERP
SHiNE
RS-CIT
Tally पूर्ण व्यवसायिक कोर्स
DCA
PGDCA
PDCA
Spoken English
राजसमन्द का नं. 1 कम्प्यूटर संस्थान
शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469
शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

उतरी घाणी बलीता जोग

रंग रंगीली दनिया म्हे विद्वान लोगां मोकला सिधांत वखाण्या है। पण जणा रो पालो हकीकत ऊं पड्यो व्हे तो आपणा अनुभव ऊं ठा बंद योइज वतलावे है क मतलब अर उपयोगिता रो सिधांत संसार म्हे घणो हांतरो अर हाऊ चाले है। काम पड़े वणी वगत मनख नानो- नानो वेईन मण री माखी वणीन वात करे, रांड रोवण्यो रोवे अर खुद री अबकाई वतावे। काम ने जेम तेम निकालवा री गिणघाटी गावे। भूतकाल म्हे व्ही थकी भूल चूक रो पछतावो करे। नीची नाड़की करीन अरमण्यो धरमण्यो वेईन रेवे।

काम निकल्या केड़े तो गरज गहेला री चाल ढाल ईज बदल जावे। ज्यादा ऊं ज्यादा थोड़ाक दन गुण जस गाई ले। पछे तो होर धोर वणीन चालतो वणे। कवि अब्दुर्रहीम खानखाना मतलबी लोगा रे संबंध म्हे दोहो लिखी न हाऊज स्पष्ट कीदो-

काज परे कछु और है, काज सरे कछु और।
रहिमन भांवरी के भए, नदी सिरावत मौर।।

व्याव मांडो व्हेवे जदी मोड़ (सेहरा) ने वींद वींदणी रे माथे बांधे, घणा हम्भाली- हम्भाली न राखे। भांवरी पड्या पछे (फेरे के बाद) वणाईज मोड़ ने नंदी म्हे परा पधरावे। दुनिया री याईज रीत है। हीदा- सरल स्वभाव रा मनखा ने मतलबी वैवार परे घणो अमरोस आवे।

लोकित (लोकाचार) रो ख्याल राखता थकां मनख जात यूं तो घणा ढपला (नाटक) करे, आपणास जतावे, पण पागती म्हे हाथ तो सेवाभावी देवता आदमी ईज देई सके। टाबर टोली ऊं लगाईन मोट्यार न उमर याप्ता हगलाई जणा आपणो आपणो संपट राखवा री हुंश्यारी राखे। भोली गाय वीणन दूजा री भाल राखवा वाळो तो डोढ़ श्याणा री नजरा म्हे चरगेल्यो ईज मान्यो जावे। कुटुम कबीला म्हे हेंग जणा आजकाले छोरा छोरिया ने सिकसा ई याईज देवे थां थाणी हुंश्यारी राखो, संपट गांठवा म्हे चेतो राखो न्हीं तो कोई भाव ईज न्हीं पूछेगा। जेम तेम किस्तर भी जो आपणो खर्चो खातो चलाई सके, खुद रो काम करी सके, परिवार अर हारी वैवारी रो काम निकाली सके, वणी री वेल्यू वणी रहेवे। जो आपणा माखा ई न्हीं उड़ाई सके, वणी ऊं हीदे मुंडे कोई वात करनो पसंद नी करें। वजूद वणी रो ईज रेवे जो परिवार समाज रे उपयोगी है। बेकार वेताईन भंगार जतरीक् कदर वेई जावे। अणी वास्ते दुनिया कैवे है- उतरी घणी बलीता जोग।

नगेन्द्र कुमार मेहता
शिक्षाविद् एवं साहित्यकार
तेलियो का तालाब नाथद्वारा
मो. 98299-60055

स्वाधीनता दिवस एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

सुरेन्द्रसिंह राठौड़
विधायक-कुंभलगढ़

श्रीमती निर्मला कुंवर
सरपंच

खुमसिंह बल्ला
समाज सेवी

कैलाशदास
ग्राम विकास अधिकारी

श्रीमती शांता बाई-उपसरपंच

समस्त वार्डपंच एवं ग्रामवासी

जल शक्ति अभियान

- जागो अब जल के लिए, बचाओ उसे कल के लिए। ◆ सरकार ने संभाली हैं जल संचय की कमान, अब और बढ़ेगा राजस्थान का मान।
- पानी का नहीं कोई विकल्प, जल संरक्षण का ले संकल्प। ◆ हम सब है साथ, जल ग्रहण विकास अब अपने हाथ।
- बचाएं जल करे संकल्प। पानी का नहीं कोई विकल्प। ◆ जल की बचत अधिक उपज। ◆ जल तो देता हैं खुशहाली, जल से आती हैं हरियाली।
- जल की एक-एक बूंद जुटाएं जीवन को स्मृद्ध बनाए। ◆ भूजल सोनो है इसे व्यर्थ नहीं खोनो है।
- जल व्यर्थ नहीं बहाना है सबको यह समझाना है। ◆ यदि चाहते हो अपना कल तो बचाओ वर्षा जल।

दौड़ते पानी को चलना सिखाएं, चलते पानी को रेंगना सिखाएं, रेंगते पानी को रूकना सिखाएं और रूके हुए पानी को भूमि में समाहित होना सिखाएं।

ग्राम पंचायत गजपुर, पंचायत समिति कुंभलगढ़

श्रीमती मंजु गुर्जर
सरपंच

श्रीमती इंद्रा कुंवर
उपसरपंच

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

मीठालाल मीणा
ग्राम विकास अधिकारी

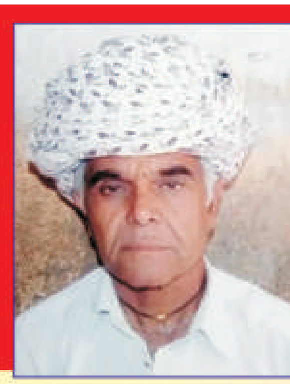

घासीरामजी गुर्जर
पूर्व सरपंच, कालिंजर

शंकरलाल गुर्जर
पूर्व सरपंच-कालिंजर

वार्डपंच :- खेमराज गुर्जर, सोहनी गुर्जर, भैराराम गुर्जर, नाथुलाल दर्जी, हंजाबाई भील, खुमाण भील, देवीसिंह बल्ला, सीता कुंवर, तेलाराम बलाई, सुरजदेवी गुर्जर एवं समस्त ग्रामवासी

जल शक्ति अभियान

- जागो अब जल के लिए, बचाओ उसे कल के लिए। ◆ सरकार ने संभाली हैं जल संचय की कमान, अब और बढ़ेगा राजस्थान का मान।
- पानी का नहीं कोई विकल्प, जल संरक्षण का ले संकल्प। ◆ हम सब है साथ, जल ग्रहण विकास अब अपने हाथ।
- बचाएं जल करे संकल्प। पानी का नहीं कोई विकल्प। ◆ जल की बचत अधिक उपज। ◆ जल तो देता हैं खुशहाली, जल से आती हैं हरियाली।
- जल की एक-एक बूंद जुटाएं जीवन को स्मृद्ध बनाए। ◆ भूजल सोनो है इसे व्यर्थ नहीं खोनो है।
- जल व्यर्थ नहीं बहाना है सबको यह समझाना है। ◆ यदि चाहते हो अपना कल तो बचाओ वर्षा जल।

दौड़ते पानी को चलना सिखाएं, चलते पानी को रेंगना सिखाएं, रेंगते पानी को रूकना सिखाएं और रूके हुए पानी को भूमि में समाहित होना सिखाएं।

ग्राम पंचायत कालिंजर, पंचायत समिति कुंभलगढ़

"SHREE"

Tension®

SHOWROOM

Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt

धमाका ऑफर

लोग सस्ता कहते है, हम सस्ता देते हैं....

ब्राण्डेड शर्ट

1 पीस

₹ 299 में

ब्राण्डेड जीन्स

1 पीस

₹ 499 में

शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास

100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)

Mob. 8769955630, 7230059101

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट कांकरोली,

जिला–राजसमंद, 9414239648, 96729 94705

Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To